समुद्र सर्जना

SAMUDRA SARJANA

अंक 2 | बर्ष : 2025

समुद्री वाणिज्य विभाग, मुंबई

MERCANTILE MARINE DEPARTMENT, MUMBAI

प्रतिष्ठा भवन, न्यू मरीन लाइन्स, मुंबई - 400020

Pratishtha Bhawan, New Marine Lines, Mumbai-400020

दूरभाष/Telephone : 2203 9881/ 2203 9883 , ई-मेल/E-mail : mumbai-mmd@gov.in , वेब/Web : https://mmdmumbai.in/

श्याम जगन्नाथन, भा.प्र.से.
नौवहन महानिदेशक
एवं अपर सचिव, भारत सरकार

Shyam Jagannathan, I.A.S.
Director General of Shipping &
Additional Secretary to the Govt. of India

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
Government of India
पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय
MINISTRY OF PORTS, SHIPPING AND WATERWAYS
नौवहन महानिदेशालय
Directorate General of Shipping

संदेश

हर्ष का विषय है कि समुद्री वाणिज्य विभाग, मुंबई हिंदी गृह पत्रिका "समुद्र सर्जना" का दूसरा अंक प्रकाशित करने जा रहा है। यह पत्रिका राजभाषा हिंदी की विभिन्न रचनाओं का दर्पण है, जो सभी अधिकारियों और कर्मचारियों के सामूहिक प्रयासों का परिणाम है।

हमें पूर्ण विश्वास है कि यह अंक न केवल ज्ञानवर्धक सिद्ध होगा बल्कि इससे विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरणा भी मिलती रहेगी। हम उन सभी लेखकों, संपादकों एवं सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने इस पत्रिका को साकार करने में सक्रिय भूमिका निभाई।

पत्रिका "समुद्र सर्जना" के दूसरे अंक की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

18/06/25

श्याम जगन्नाथन, भा.प्र.से.,
नौवहन महानिदेशक एवं
अपर सचिव, भारत सरकार,
नौवहन महानिदेशालय, मुंबई

9वीं मंज़िल, बीटा बिल्डींग, आई थिंक टेक्नो कैम्पस, कांजुर गाँव रोड, कांजुरमार्ग (पूर्व), मुंबई–400042
9th Floor, BETA Building, I-Think Techno Campus, Kanjur Village Road, Kanjurmarg (E), Mumbai-400042
दूरभाष/Tel No.: +91-22-2575 2005/10 • फैक्स/Fax : +91-22 2575 2011 • ई–मेल/Email : dg-dgs@gov.in

सत्यमेव जयते

प्रधान अधिकारी की ओर से संदेश

समुद्री वाणिज्य विभाग, मुंबई, अपने विभाग की गृह पत्रिका “समुद्र सर्जना” का दूसरा अंक प्रकाशित करने जा रहा है इससे मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है । समुद्री वाणिज्य विभाग, मुंबई हमेशा प्रयासरत रहा है की राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में किए गए प्रावधानों का शत प्रति शत पालन हो और सरकारी कामकाज अधिक से अधिक हिन्दी में हो । मैं समझता हूँ कि इस दिशा में दूसरे अंक का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण कदम है । यह अधिकारी और कर्मचारियों में अनुरूप रुचि पैदा करने में प्रेरणादायी रहेगी ऐसा मुझे आशा ही नहीं बल्कि विश्वास है ।

सर्वप्रथम, मैं उन सारे अधिकारी एवं कर्मचारियों को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने इस पत्रिका के लिए अपनी रचनों का योगदान दिया । यह पत्रिका पढ़ते समय उन्हें पसंद तो जरूर आएगी और इससे राजभाषा हिन्दी के प्रचार/प्रसार के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी, क्यूँ की हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने कहा है, वह देश तब तक स्वतंत्र नहीं है जब तक वह अपनी भाषा में नहीं बोलता और आगे हिन्दी भाषा के बारे में उन्होंने इस बात का भी जिक्र किया है की राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है । अतएव, इस पत्रिका के लिए मैं संपादक मण्डल को धन्यवाद देता हूँ कि इस गृह पत्रिका का समुद्री वाणिज्य विभाग, मुंबई द्वारा प्रकाशन, उज़्जवल भविष्य का प्रतीक है ।

(कप्तान एस. आई. अबुल कलम आजाद)
प्रधान अधिकारी-सह-संयुक्त नौवहन महानिदेशक (तकनीकी)
समुद्री वाणिज्य विभाग, मुंबई

समुद्री वाणिज्य विभाग
Mercantile Marine Department
मुंबई
Mumbai

सत्यमेव जयते

कार्यालय प्रमुख का संदेश

समुद्री वाणिज्य विभाग, मुंबई, अपनी गृह पत्रिका "समुद्र सर्जना" का दूसरा अंक प्रकाशित करने जा रही है इससे मेरा मन खुशी से उमड़ रहा है । राजभाषा के प्रति लोगों के दिलों में रुचि पैदा करने में यह बड़ी उपलब्धि रहेगी ऐसा मेरा विश्वास है ।

भारत सरकार, राजभाषा विभाग, द्वारा केंद्र सरकार के कार्यालयों में इसका प्रचार/प्रसार कर्मचारियों के बीच सद्भावना, प्रेरणा और प्रोत्साहन का आधार बनी है, इसको दृष्टिगत रखते हुए, दूसरे अंक को प्रकाशित करने में हमें एक प्रकार की ऊर्जा प्राप्त हो रही है ।

पत्रिका के इस अंक पर अपने विचार/सुझाव की हमें प्रतीक्षा रहेगी ताकि अगले अंक के लिए, उसे प्रेरणा का स्त्रोत माना जाएगा ।

(श्रीश कुमार)
भारत सरकार के उप मुख्य पोत सर्वेक्षक-
सह-वरिष्ठ उप नौवहन महानिदेशक(तकनीकी)
तथा कार्यालय प्रमुख

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

मुझे यह घोषणा करते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि समुद्री वाणिज्य विभाग, मुंबईकी हिंदी पत्रिका "समुद्र सर्जना"का द्वितीय संस्करण आपके हाथों में है। यह अंक न केवल विभाग की तकनीकी प्रगति का दस्तावेज़ है, बल्कि इसमें हमारे सहयोगियों की भावनाओं, अनुभवों और रचनात्मक अभिव्यक्तियों का भी समावेश है।

भारत की समृद्ध समुद्री परंपरा में समुद्री वाणिज्य विभाग, मुंबई की एक विशिष्ट भूमिका रही है। विभाग का गौरवशाली इतिहास, जिसमें सुरक्षा, सेवा और प्रतिबद्धता की मिसालें हैं, हमें निरंतर प्रेरणा देता है। इस अंक में इतिहास के उन अनछुए पन्नों को भी संजोया गया है, जो हमारे संगठन की नींव को मजबूती देते हैं।

विभाग द्वारा अपनाई जा रही नई तकनीकों — जैसे डिजिटल सर्वे प्रणाली, स्मार्ट निरीक्षण उपकरण और सूचना प्रौद्योगिकी का एकीकृत उपयोग — न केवल कार्य की गुणवत्ता में वृद्धि कर रहे हैं, बल्कि हमारी कार्यक्षमता को भी वैश्विक मानकों के अनुरूप बना रहे हैं। इन नवीन पहलों की झलक आपको इस अंक के तकनीकी लेखों में मिलेगी।

इस विशेष संस्करण में कुछ भावनात्मक और प्रेरणादायक रचनाएँ भी सम्मिलित हैं, जो हमारे सहयोगियों के अंतर्मन को छूती हैं। श्री विवेक द्वारा अपनी नन्ही बेटी के लिए लिखा गया कोमल और संवेदनशील गद्य-पाठ एक पिता के निस्वार्थ प्रेम और भावनात्मक जुड़ाव को सुंदरता से व्यक्त करता है। वहीं, श्री संतोष द्वारा अपने मार्गदर्शक और विभाग के पूर्व कर्मचारी को श्रद्धांजलि स्वरूप लिखी गई आत्मीय स्मृति न केवल एक गुरु-शिष्य के रिश्ते को उजागर करती है, बल्कि हमारे संस्थागत मूल्यों की भी गहराई से पहचान कराती है। श्री पवार द्वारा मराठा गौरव पर लिखे गए विचारशील लेख में इतिहास, साहस और स्वाभिमान का अद्वितीय संगम देखने को मिलता है, जो हमें अपने सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करने का अवसर प्रदान करता है।

इस संस्करण में एक लेख भारत की मर्केंटाइल मरीन के क्षेत्र में उद्यमिता की संभावनाओं को रेखांकित करता है। यह लेख नवाचार, निवेश और साझेदारी के माध्यम से समुद्री क्षेत्र को सशक्त और आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में निजी क्षेत्र की भूमिका को रेखांकित करता है। हम समर्पित उद्यमियों और स्टार्टअप्स को आमंत्रित करते हैं कि वे इस समुद्री यात्रा का हिस्सा बनें और भारत को एक वैश्विक समुद्री शक्ति बनाने में भागीदार बनें।

इस पत्रिका की एक अन्य विशेषता यह भी है कि इसमें हमारे स्टाफ सदस्यों की यात्राओं के संस्मरण, कविताएं, चित्रों और सांस्कृतिक गतिविधियों का जीवंत चित्रण किया गया है। यह हमें एक-दूसरे के और भी निकट लाता है और कार्यस्थल को एक परिवार की भावना प्रदान करता है।

हम आशा करते हैं कि यह संस्करण न केवल आपके ज्ञान में वृद्धि करेगा, बल्कि आपको आनंद, गर्व और प्रेरणा भी प्रदान करेगा। अंत में, मैं सभी योगदानकर्ताओं को और अपने सभी सहयोगियो, विशेषकर श्री दिलीप सातघर, सुश्री अमीषा कांबले एवं सुश्री पौर्णिमा मोरे को धन्यवाद देता हूँ, जिनके प्रयासों के बिना यह प्रकाशन संभव न हो पाता।

आइए, हम सब मिलकर इस समुद्री यात्रा को और भी उत्साहपूर्वक, जिम्मेदारीपूर्वक और एकता के साथ आगे बढ़ाएं।

शुभकामनाओं सहित,

मोहित बहल,
उप समुद्री सलाहकार-सह-वरिष्ठ डी.डी.जी (तकनीकी),
समुद्री वाणिज्य विभाग, मुंबई.

अनुक्रमणिका

अ.सं.	लेख / विषय	लेखक/ लेखिका	पृष्ठ सं.
1	मेरी अयोध्या यात्रा – धार्मिक यात्रावृत	श्रीमती अनिता नायर	01
2	समुद्री वाणिज्य विभाग, मुंबई - 95 वर्षों का गौरवशाली इतिहास - वृत्तांत	श्री मोहित बहल	02
3	विनम्रता का पाठ - अध्यात्म/ संत वाणी	श्री सुधीर कुमार श्रीवास्तव	05
4	डिजिटलीकरण और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) का मर्केंटाइल मरीन डिपार्टमेंट, मुंबई में उपयोग - तकनीकी	श्री प्रवीण कपाले	06
5	समुद्र वाणिज्य विभाग, मुंबई – संक्षिप्त परिचय	श्रीमती ललिता तावडे	08
6	अंतर्राष्ट्रीय पोत और पत्तन सुविधा सुरक्षा (ISPS) कोड - विधिक	श्री अजय शंकर प्रसाद	10
7	विकसित भारत - देशभक्ति काव्य	श्री संजय कु. मीना	12
8	वह कौन थी ? - रोमांच	श्री रोहन आडाव	13
9	हरियाणा एक समृद्ध राज्य - वृत्तांत	श्री भारत दहिया	14
10	मेरी गुड़िया - वात्सल्य	श्री विवेक कुमार	16
11	रत्नागिरी की अविस्मरणीय यात्रा - यात्रावृत	सुश्री मेघना बागवे	17
12	मैं अब चला - प्रेरक काव्य	श्री संतोष गडकरी	19
13	भारतीय सामुद्रिक वाणिज्य - - उद्यमियों के लिए उभरते अनेकों अवसर - वाणिज्य/ उद्यमवृत्ति	श्री मोहित बहल	20
14	पश्चिम भारत की एक जगह “धार” में स्थित क्षत्रिय परमार धारपवार	श्री संजय पवार	22
15	मेरे यादगार निवृत्त कर्मचारी - संस्मरण	श्री संतोष राम कांबले	24
16	लोकल ट्रेन - मुंबई की जीवनरेखा - जीवनानुभव	सुश्री स्नेहा ठोकले	26
17	कोविड का हमारे जीवन पर प्रभाव - जीवनानुभव	श्री आदित्य	28
18	ग्राम जीवन	श्री अजय भगत	29
19	यादगार पिकनिक - यात्रावृत	सुश्री पौर्णिमा मोरे	31
20	आपका योगदान अमूल्य रहा – अब नए सफर के लिए शुभकामनाएं!	संपादक - मंडल	32
21	कहानियाँ सुनाती कुछ मूक तस्वीरें	संपादक - मंडल	33

मेरी अयोध्या यात्रा

हाल ही में, मैंने अयोध्या की एक यादगार यात्रा की। इस पवित्र नगरी का ऐतिहासिक और आध्यात्मिक महत्व देखते ही बनता है। अयोध्या भारत के उत्तर प्रदेश राज्य का एक अति प्राचीन धार्मिक नगर है। यह पवित्र सरयू नदी के तट पर बसा है। इस नगर को मनु ने बसाया था और इसे 'अयोध्या' का नाम दिया जिसका अर्थ होता है अ-युध्य अथार्थ जिससे युध्य करना असंभव हो। इसे 'कौशल देश' भी कहा जाता

था। अयोध्या नगरी, जहां भगवान श्रीराम का जन्म हुआ, जहां महाकाव्य रामायण की शुरुवात हुई और जहां रामायण का समापन भी हुआ। अयोध्या नगरी, जिसके बारे में भारत वर्ष में पैदा हुआ बच्चा-बच्चा जानता है। भारत के प्रसिद्ध धार्मिक स्थलों में से एक है अयोध्या, जिसे मंदिरों का शहर भी कहा जाता है।

यात्रा का मुख्य आकर्षण "श्री राम मंदिर" था, जहां भव्य मंदिर की दिव्यता और शिल्पकला को देखकर मन भक्तिभाव से भर गया। मंदिर परिसर रामलला के दर्शन का अनुभव अविस्मरणीय रहा।

इसके अलावा, मैंने सरयू नदी के तट पर कुछ समय बिताया, जहां गंगा आरती और शांत वातावरण ने मन को शांति दी। हनुमानगढ़ी मंदिर की यात्रा भी की, जो श्रद्धालुओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण स्थान है।

अयोध्या के प्राचीन गलियों और स्थानीय बाजारों का भी आनंद लिया, जहां धार्मिक पुस्तकें, प्रसाद और हस्तशिल्प की अनूठी चीजें देखने को मिलीं।

स्थानीय व्यंजनों का स्वाद भी लिया, जिसमें खासतौर पर कचौड़ी और मिठाइयां बहुत लाजवाब थीं।

कुल मिलाकर, अयोध्या यात्रा आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टि से बेहद समृद्ध अनुभव रही।

श्रीमती अनिता नायर,
प्रवर श्रेणी लिपिक
समुद्री वाणिज्य विभाग, मुंबई.

समुद्री वाणिज्य विभाग, मुंबई (M.M.D. Mumbai) – 95 वर्षों का गौरवशाली इतिहास

भारत के पश्चिमी तट पर स्थित महाराष्ट्र, जिसका तटीय क्षेत्र न केवल अपनी प्राकृतिक छटा के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टि से भी अत्यंत समृद्ध है। लगभग **720 किलोमीटर लंबी समुद्री रेखा** वाले इस राज्य में समुद्र तटों, प्राचीन मंदिरों, किलों और सांस्कृतिक धरोहरों की भरमार है।

चाहे वो अलीबाग, **कशीद**, **मालवण** के पारदर्शी जल, सुनहरे बालू और हरे-भरे नारियल के पेड़ों से भरपूर तट हों या **गणपतिपुले** कास्वयंभू श्री गणेश का मंदिर

या **शौर्य और साम्राज्य की वीर गाथा सुनाते सिंधुदुर्ग** और **मुरुड-जंजीरा** जैसे अपराजेय दुर्ग -- महाराष्ट्र का समुद्र तट अमूल्य है।

और इस महान निधि की महिमा और वित्तीय संपदा मे चार चांद लगाते मुंबई शहर और बंदरगाह और उसके अपतटीय तेल क्षेत्र (Offshore Oil Fields)।

महाराष्ट्र को अपने बंदरगाहों पर भी गर्व है जो व्यापार, परिवहन और नौवहन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इन बंदरगाहों की मदद से महाराष्ट्र न केवल भारत के व्यापार में अग्रणी भूमिका निभाता है, बल्कि क्षेत्रीय विकास और रोजगार सृजन में भी योगदान देता है।

महाराष्ट्र का समुद्री तट, विशेषकर मुंबई क्षेत्र, अत्यधिक व्यस्त समुद्री यातायात वाला क्षेत्र है। यहाँ से न केवल व्यावसायिक जहाज गुजरते हैं, बल्कि मुंबई अपतटीय तेल क्षेत्र (Mumbai High) में तेल उत्खनन का कार्य भी चलता है।

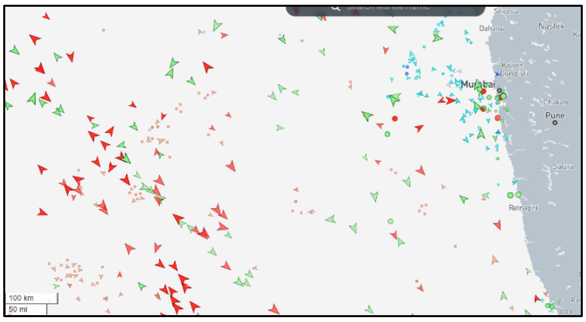

जहाँ ये गतिविधियाँ अर्थव्यवस्था में अपार मूल्य जोड़ती हैं, वहीं ये सुरक्षा, संरक्षण और पर्यावरण संरक्षण के लिए चुनौतियाँ भी खड़ी करती हैं। और इसके लिए एम.एम.डी. मुंबई 1929 से निरंतर इन क्षेत्रों पर नियामक निगरानी रख रही है -- यानी **उत्कृष्ट सेवा के 95 शानदार वर्ष**।

एम.एम.डी. मुंबई की स्थापना 1929 में तत्कालीन वाणिज्य विभाग के अधीन मर्चेंट शिपिंग एक्ट 1923 के

प्रावधानों के तहत की गई थी। इसी समय अन्य एम.एम.डी. जिले भी अस्तित्व में आए। वे थे कराची, मद्रास, कलकत्ता और रंगून। तब से एम.एम.डी. मुंबई लगातार भारत के मर्केंटाइल मरीन की सेवा और विकास के लिए समर्पित है।

1949 में जब नौवहन महानिदेशालय (Directorate General of Shipping) का गठन हुआ, तब मर्केंटाइल मरीन डिपार्टमेंट के तीन जिलों मुंबई, कोलकाता और चेन्नई को भारत सरकार के शिपिंग मंत्रालय के तहत नीति, नियम स्थापित करने के लिए एक केंद्रीकृत नियंत्रण प्राधिकरण के अधीन लाया गया।

मर्केंटाइल मैरीन विभाग मुंबई के प्रथम प्रधान अधिकारी कैप्टन ई.वी.विश थे, जिन्हें 1 फरवरी, 1930 को नियुक्त किया गया था

स्वतंत्रता के बाद भी ब्रिटिश अधिकारी एम.एम.डी. मुंबई के प्रधान अधिकारी बने रहे। मर्केंटाइल मैरीन विभाग के इतिहास में केवल 06.10.1951 को एक भारतीय अधिकारी श्री बी.के. गुप्ता को प्रधान अधिकारी के रूप में नियुक्त किया गया।

प्रधान अधिकारी

समुद्री वाणिज्य विभाग मुंबई

कप्तान ई.बी.विश (आर.आय.एम)	01:02:1930	01:01:1931
कप्तान आर.एम.फिल्बे (आर.आय.एम)	02:01:1931	30:05:1935
कप्तान एच.एल.डेविरा (आर.आय.एन)	01:06:1935	01:03:1940
अभि.कमाण्डर डब्लु.जे. लिफ्टन (आर.आय.एन)	01:04:1940	14:10:1942
अभि. कमाण्डर जे.एच. गॅके (आर.आय.एन)	15:10:1942	11:05:1945
अभि. कमाण्डर ए. बी. कॉलिन्स	12:05:1945	11:07:1945
अभि. कमाण्डर एच.जे. केसवेल	12:07:1945	18:06:1946
अभि.कमाण्डर इ. वायमन	19:06:1946	17:02:1947
कप्तान(इ) एम.जे.मिल्स (आय.एन)	18:02:1947	05:03:1948
कप्तान (इ) ए.बी. कॉलिन्स (आय.एन)	06:03:1948	05:10:1951
श्री.बी.के.गुप्ता	06:10:1951	18:06:1957
श्री.टी.बेरी	25:06:1957	30:06:1969
श्री.के. पार्थसारथी	14:07:1969	28:02:1977
श्री.आर.सी.मोहन	06:04:1977	26:05:1977
श्री.वी.आर.राजागोपालन	27:05:1977	01:07:1977
श्री.आर.एल. रिखे	11:07:1977	15:11:1979
कप्तान अे.जे. डिसुजा	16:11:1979	13:08:1980
श्री.बी.बी. बडवल (आय.सी.)	14:08:1980	21:03:1981
कप्तान अे.जे. डिसुजा	22:03:1981	22:06:1981
श्री.पी.के. बॅनर्जी	23:06:1981	31:03:1982
श्री.ससधर दत्ता	01:04:1982	07:02:1983

कप्तान ए.के.प्रसाद (आय.सी.)	08:02:1983	16:02:1984
कप्तान पी.एस.बर्वे	17:12:1984	11:12:1987
कप्तान ए.के.प्रसाद	27:05:1988	21:05:1990
श्री.पी.एन.मेहरोत्रा (आय.सी.)	22:05:1990	25:07:1990
श्री.एस.एम.मुखर्जी (आय.सी.)	26:07:1990	30:06:1991
कप्तान एस.एस.नाफडे	01:07:1991	20:09:1994
श्री.पी.एन.मेहरोत्रा	21:09:1994	31:07:1995
श्री.एस.नारायण (आय.सी.)	01:08:1995	04:09:1995
कप्तान सुधीर कुमार (आय.सी.)	05:09:1995	18:06:1997
श्री.संजय चक्रबर्ती (आय.सी.)	19:06:1997	08:07:1999
श्री.अजोय चॅटर्जी	08:07:1999	29:01:2001
कप्तान एम.एम.सग्गी	30:01:2001	21:08:2003
श्री.एन.डी.सरकार (आय.सी.)	21:08:2003	14:06:2005
श्री. ए. बॅनर्जी (आय.सी.)	15:06:2005	04:02:2007
कप्तान सुधीर कुमार (आय.सी.)	05:02:2007	31:05:2007
श्री. ए. बॅनर्जी (आय.सी.)	01:06:2007	07:07:2008
श्री. ए. बॅनर्जी	08:07:2008	11:01:2011
श्री.आर.व्ही.बी.नायर (आय.सी.)	12:01:2011	31:03:2011
श्री. डी. मेहरोत्रा (आय.सी.)	01:04:2011	19:10:2011
कप्तान एल.के. पण्डा	20:10:2011	06:04:2015
श्री.एस.बारीक.(आय.सी)	07:04:2015	27:05:2015
कप्तान जे.एस.उप्पल	28:05:2015	31:07:2017
कप्तान के.पी.जयाकुमार(आय.सी)	01:08:2017	26:06:2018

नाम	से	- तक
कप्तान के.पी.जयाकुमार	27-06-2018	08-04-2019
श्री एस. बारीक	09-04-2019	01-01-2020
कप्तान के.पी.जयाकुमार	02-01-2020	31-07-2022
कप्तान एस.आई.अबुल कलाम आज़ाद	03-08-2022	

एम.एम.डी .मुंबई का एक प्रमुख कार्य एम.एस. अधिनियम 1958 और तटीय पोत अधिनियम 1838 के तहत जहाजों का पंजीकरण करना है।

एम.एम.डी .मुंबई द्वारा पंजीकृत पहला जहाज "दयावती" था, आधिकारिक संख्या 153812, जिसे 16.10.1929 को पंजीकृत किया गया ।

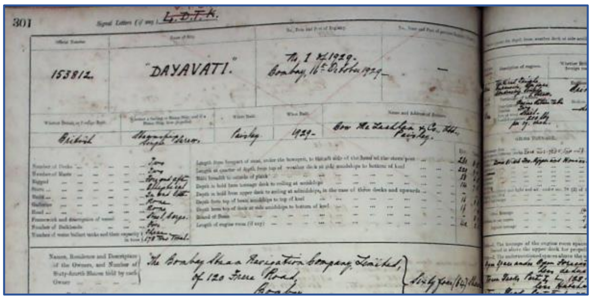

1947 में जब आज़ादी मिली तो भारतीय बेड़े में सिर्फ़ 60 जहाज़ थे और कुल GT 190000 से कम था। आज़ाद भारत ने 1954 तक 2 मिलियन GT का लक्ष्य रखा था। हालाँकि, 1959 में भी भारतीय बेड़े का आकार 1 मिलियन GT से कम था। फिर भारतीय नौवहन का स्वर्णिम काल आया जब 1960 और 1975 के बीच 15 साल की छोटी अवधि में भारतीय बेड़े का आकार 1 मिलियन GT से बढ़कर 5 मिलियन GT हो

गया। इस वृद्धि में एम.एम.डी. मुंबई ने अग्रणी भूमिका निभाई थी।

आज भी एम.एम.डी. मुंबई, एम.एस. अधिनियम 1958 और तटीय पोत अधिनियम 1838 के अंतर्गत भारत में पोतों का प्रमुख रजिस्ट्रार है, तथा अन्य सभी एम.एम.डी. के संयुक्त पंजीकरण से भी अधिक पंजीकरण इसके द्वारा किए गए हैं। इसे बढ़ाने के लिए निरंतर कार्यरत है।

जहाजों के पंजीकरण के अलावा, एम.एम.डी. मुंबई और इसके अधीनस्थ कार्यालयों के प्रमुख कार्य निम्नानुसार हैं:

(i) जहाजों का सर्वेक्षण एवं पंजीकरण, और पेट्रोलियम लाइसेंस
(ii) बंधकों का पंजीकरण और प्रमाणन संबंधित प्रमाणन (एम.एस.एम.डी., जी.टी.एल, डी.एम.एल.सी, सी.एस.आर.);
(iii) जहाजों का ऑडिट (आई.एस.पी.एस., आई.एस.एम और एम.एल.सी.);
(iv) फ्लैग स्टेट (एफ.एस.आई.) और पोर्ट स्टेट कंट्रोल (पी.एस.सी.) निरीक्षण;
(v) नाविकों की परीक्षा और प्रमाणन;
(vi) सेवा प्रदाताओं का निरीक्षण और प्रमाणन (एल.एस.ए./ एफ.एफ.ए. /रेडियो/ आई.एम.एस.बी.सी./ आई.एम.डी.जी.) ;
(vii) एम.टी.आई. का निरीक्षण और प्रमाणन
(viii) बंदरगाहों और टर्मिनलों का निरीक्षण/ऑडिट (आई.एस.पी.एस., एन.एस.पी.सी., पी.ई.आर.एफ. एम.एल.सी);
(ix) आकस्मिक प्रतिक्रिया और दुर्घटना जांच में समन्वय;
(x) एस.एम. और एस.ई.ओ. के कार्यालयों के प्रशासनिक मामले, जिनमें आर.ओ. सेल्स मुंबई और जामनगर के कार्यालयों के प्रशासनिक मामले शामिल हैं;
(xi) नीतिगत मामलों पर डी.जी.एस को इनपुट

अपने 95 वर्षों के छोटे से जीवनकाल में, एम.एम.डी. मुंबई ने न केवल भारतीय मर्केंटाइल मरीन के विकास

में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, बल्कि 'एम.एस.सी. चित्रा' की टक्कर या 'नु-शि-नलिनी' आदि के मामले में विभिन्न आकस्मिकताओं से सफलतापूर्वक निपटा है।

यह राष्ट्र और अंतर्राष्ट्रीय समुद्री समुदाय की सेवा में आगे भी मजबूती से बढ़ता रहेगा।

✍ मोहित बहल,
उप समुद्री सलाहकार-सह-वरिष्ठ डी.डी.जी (तक),
समुद्री वाणिज्य विभाग, मुंबई.

विनम्रता का पाठ

संत रमन्ना के आश्रम में अनेक लोग अपनी समस्याओं के समाधान के लिए आते थे। एक दिन एक जिज्ञासु व्यक्ति आया और संत के पास शीघ्र पहुंचने के लिए जल्दी से अपने जूते उतारने लगा। जूते आसानी से नहीं उतरे, तो क्रोध में उसने किसी तरह पैर पटककर उन्हें उतारा और तेजी से आश्रम से दरवाजे को धकेल कर संत के पास पहुंच गया। आते ही उसने कहा, बाबा, मैं आपसे अपनी समस्या का समाधान जानने आया हूं। संत बोले, तुम्हारी समस्या का समाधान असंभव है।

वह व्यक्ति आश्चर्य से बोला, 'भला मेरी समस्या का समाधान क्यों नहीं होगा? संत ने कहा, क्योंकि तुम ठीक से व्यवहार करना ही नहीं जानते। जो विनम्र नहीं हो सकता, उसका काम भी सफल नहीं होता। व्यक्ति ने पूछा, पर मेरे व्यवहार में क्या दोष है? संत बोले, कदम-कदम पर है। तुम अकारण क्रोध में वस्तुओं को नुकसान पहुंचाते हो। तुमने अभी-अभी जूते और दरवाजे पर क्रोध किया। जाओ उनसे माफी मांगो।

वह व्यक्ति हैरानी से बोला, 'मैं बेजान चीजों से माफी मांगूं? संत बोले, तुम बेजान वस्तुओं के साथ भी सही ढंग से व्यवहार नहीं कर सकते और चाहते हो कि ईश्वर व संसार तुम्हारे साथ उचित व्यवहार करे। यदि तुमने इन वस्तुओं को वास्तव में बेजान समझा होता तो तुम इन पर क्रोध ही नहीं करते। विनम्रता से सारी समस्याओं के समाधान स्वयं हो जाते हैं। वह व्यक्ति संत का आशय समझ गया। उसने उन वस्तुओं के साथ-साथ संत से भी माफी मांगी और आगे से हमेशा हर किसी के साथ विनम्रता से पेश आने का वचन दिया

श्री. सुधीर कुमार श्रीवास्तव
सर्वेक्षक प्रभारी
समुद्री वाणिज्य विभाग, गोवा

डिजिटलीकरण और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) का मर्केंटाइल मरीन डिपार्टमेंट, मुंबई में उपयोग

समुद्री उद्योग, जो पारंपरिक रूप से मैनुअल प्रक्रियाओं और कागज आधारित दस्तावेजों पर निर्भर रहा है, अबडिजिटलीकरण और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के एक नए युग में प्रवेश कर चुका है। भारत में इस परिवर्तन की अगुवाईमर्केंटाइल मरीन डिपार्टमेंट (MMD), मुंबईकर रहा है, जोनौवहन महानिदेशालय (DG Shipping) के अंतर्गत कार्य करता है। यह विभाग जहाजों की सुरक्षा, नाविकों के प्रमाणन और समुद्री नियमों के अनुपालन को सुनिश्चित करता है। जैसे-जैसे समुद्री संचालन अधिक जटिल और वैश्विक होते जा रहे हैं, दक्षता बढ़ाने के लिए डिजिटल उपकरण और AI तकनीक को MMD मुंबई द्वारा अपनाया जा रहा है।

क. MMD मुंबई में डिजिटलीकरण की पहल

डिजिटलीकरण की यह प्रक्रिया DG शिपिंग की एक व्यापक रणनीति का हिस्सा है जिसका उद्देश्य पारदर्शिता, दक्षता और उत्तरदायित्व को बढ़ावा देना है।

(i) ई-गवर्नेंस प्रणाली

अब विभिन्न सेवाएं जैसे –

- योग्यता प्रमाणपत्र (CoC, CoP) के लिए ऑनलाइन आवेदन और जारी करना,
- शिपिंग दस्तावेजों और योजनाओं की डिजिटल जमा प्रक्रिया,
- दस्तावेज़ों का ई-प्रमाणीकरण,

इन सभी को एक ऑनलाइन पोर्टल पर उपलब्ध करा दिया गया है, जिससे प्रक्रियाएं तेज़ और सुगम हो गई हैं।

(ii) सिंगल विंडो सिस्टम (SWS)

MMD मुंबई नेएकल खिड़की प्रणाली (Single Window System) को अपनाया है, जो जहाज मालिकों, एजेंटों, और निरीक्षकों को एकीकृत प्लेटफॉर्म पर सभी सेवाएं प्राप्त करने की सुविधा देती है। इससे समन्वय और दक्षता में वृद्धि हुई है।

(iii) ई-प्रमाणीकरण और डिजिटल रिकॉर्ड

अब सभी प्रमाणपत्रों और सर्वेक्षण रिकॉर्ड कोडिजिटल रूप में संग्रहितकिया जा रहा है। इससे जालसाजी की संभावना कम होती है, और निरीक्षण व ऑडिट प्रक्रिया तेज हो जाती है।

(iv) रीयल-टाइम पोत निगरानी

डिजिटल उपकरणों की मदद से अब जहाजों कीगतिविधियों, निरीक्षण अनुसूचियों, और प्रमाणपत्रों की वैधता को वास्तविक समय में ट्रैक किया जा सकता है।

ख. समुद्री नियामकीय कार्यों में AI का उपयोग

MMD मुंबई ने अपने कई कार्यों में AI तकनीकों को शामिल किया है, जिनका उद्देश्यस्वचालित निरीक्षण, पूर्वानुमान विश्लेषण, और निर्णय समर्थन प्रणालीको मजबूत बनाना है।

(i) पूर्वानुमान विश्लेषण (Predictive Analytics)

AI के माध्यम से जहाजों के रख-रखाव की संभावित जरूरतों और निरीक्षण की प्राथमिकता का पूर्वानुमान लगाया जाता है। इससे उच्च जोखिम वाले जहाजों की पहचान जल्दी हो जाती है।

(ii) दस्तावेज़ों का स्वचालित सत्यापन

प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (NLP) आधारित टूल अब प्रमाणपत्रों और जहाज योजनाओं कीस्वतः जांचकर सकते हैं। इससे मैन्युअल त्रुटियां कम होती हैं और प्रक्रिया तेज़ होती है।

(iii) नाविक दक्षता विश्लेषण

AI आधारित सिस्टम नाविकों की परीक्षा, प्रशिक्षण और कार्य अनुभव का विश्लेषण कर उनकेदक्षता स्तरका अनुमान लगाते हैं, जिससे STCW मानकों के अनुसार परीक्षण संभव होता है।

(iv) सुरक्षा जोखिम मूल्यांकन

AI और मशीन लर्निंग मॉडल पुराने दुर्घटनाओं के आंकड़ों का विश्लेषण कर जोखिम वाले क्षेत्रों की पहचान करते हैं। इससे सुरक्षा उपायों की सिफारिश अधिक वैज्ञानिक बनती है।

ग. डिजिटल और AI तकनीकों के लाभ

(i). कार्यकुशलता में वृद्धि

प्रमाणपत्र सत्यापन और निरीक्षण जैसे कार्य जो पहले कई दिन लेते थे, अब कुछ घंटों में पूरे हो जाते हैं।

(ii) पारदर्शिता और जवाबदेही

डिजिटल प्लेटफॉर्म मेंऑडिट ट्रेलबनता है, जिससे भ्रष्टाचार की संभावना घटती है।

(iii) डेटा-आधारित निर्णय

MMD अब बड़ी मात्रा में आंकड़ों का विश्लेषण करनीति निर्धारण और संसाधन प्रबंधनमें सटीकता ला रहा है।

(iv) हितधारकों के लिए बेहतर सेवाएं

जहाज मालिकों और नाविकों के लिए सेवाएं अब 24x7 उपलब्ध हैं, जिससे समय और लागत दोनों की बचत होती है।

घ. चुनौतियाँ और आगे की राह

(i) तकनीकी ढांचे की सीमाएं

कुछ बंदरगाहों और कार्यालयों में अभी भी मजबूत इंटरनेट और आईटी सिस्टम की कमी है।

(ii) साइबर सुरक्षा

ऑनलाइन डाटा के साथसाइबर खतरोंकी संभावना भी बढ़ी है, जिसे नियंत्रित करना आवश्यक है।

(iii) मानव संसाधन प्रशिक्षण

AI और डिजिटल सिस्टम के उपयोग हेतु MMD कर्मचारियों कोनियमित प्रशिक्षणकी आवश्यकता है।

(iv) वैश्विक प्रणाली से सामंजस्य

भारत को यह सुनिश्चित करना होगा कि उसकी प्रणाली IMO जैसे अंतर्राष्ट्रीय निकायों की प्रणालियों सेसुसंगतहो।

निष्कर्ष

मर्केंटाइल मरीन डिपार्टमेंट, मुंबई ने डिजिटलीकरण और AI के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। इससे न केवल प्रशासनिक कार्यों में क्रांति आई है, बल्कि सुरक्षा, पारदर्शिता और सेवाओं की गुणवत्ता में भी सुधार हुआ है। जैसे-जैसे तकनीक आगे बढ़ रही है, MMD मुंबई के कार्यों में और भी अधिक स्मार्ट निरीक्षण, पूर्वानुमान प्रणाली, और स्वचालित नियमन की संभावनाएं बन रही हैं। भारत की समुद्री प्रशासनिक प्रणाली को डिजिटल युग मेंवैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धीबनाने में यह परिवर्तन अहम भूमिका निभा रहा है।

✍ प्रवीण कपाले
इंजीनियर एवं पोत सर्वेक्षक सह उप
महानिदेशक (तकनीकी)

समुद्र वाणिज्य विभाग, मुंबई – संक्षिप्त परिचय

मर्केंटाइल मैरीन डिपार्टमेंट, मुंबई की स्थापना 1929 में प्रथम एस.ओ.एल.ए,एस. (SOLAS) कन्वेंशन तथा लोड लाइन (Loadline) कन्वेंशन को लागू करने के लिए की गई थी।

यह विभाग 1949 में मुंबई में शिपिंग महानिदेशालय की स्थापना तक मंत्रालय के अधीन काम कर रहा था। एम.एम.डी. का मुख्य उद्देश्य समुद्र में जहाजों और जीवन की सुरक्षा, जहाजों का पंजीकरण, टन भार माप, चालक दल के लिए आवास, लोड लाइन के लिए सर्वेक्षण, सुरक्षा निर्माण, प्रदूषण की रोकथाम, शिपिंग दुर्घटनाओं और मलबे की जांच, यात्री जहाजों का सर्वेक्षण, जहाज पर रेडियो उपकरण, जीवन रक्षक और अग्निशमन उपकरणों के लिए वैधानिक उपकरणों का निरीक्षण और अनुमोदन, वायरलेस टेलीग्राफी, वैश्विक समुद्री संकट और सुरक्षा प्रणाली, नौवहन सहायता, प्रदूषण निवारण उपकरण, राज्य और केंद्र सरकार संगठनों की ओर से जहाजों की मरम्मत और निर्माण का पर्यवेक्षण, बंदरगाह राज्य नियंत्रण निरीक्षण, एम.एस. अधिनियम और IV अधिनियम आदि के तहत योग्यता के विभिन्न ग्रेड के प्रमाण पत्रों की जांच और प्रमाणन से संबंधित विभिन्न व्यापारिक शिपिंग कानूनों और नियमों का प्रशासन करना है।

यह विभाग व्यापारिक नौवहन अधिनियम, 1958 की धारा 8 के तहत शक्तियों को संशोधित करता है।

एम.एम,डी, मुंबई का नेतृत्व प्रधान अधिकारी करते हैं और उप नौवहन सलाहकार, उप मुख्य जहाज सर्वेक्षक, नौवहन सर्वेक्षक, इंजीनियर और जहाज सर्वेक्षक तथा अन्य सहायक कर्मचारी उनका समर्थन करते हैं। मर्मोगाओ और नोएडा में एम.एम.डी, प्रभारी सर्वेक्षक के नेतृत्व में भी एम.एम.डी., मुंबई के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्य करते हैं।

एम.एम.डी., मुंबई की संगठनात्मक संरचना:

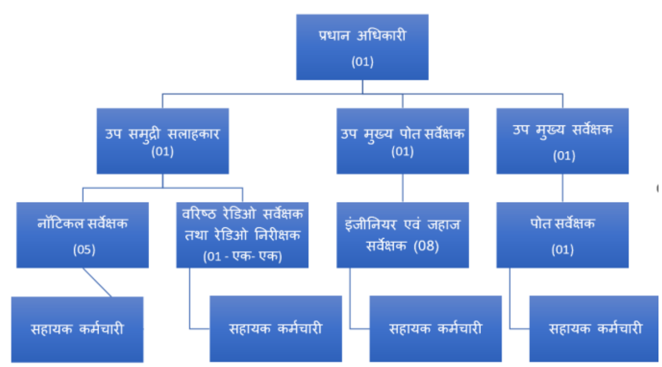

एम.एम.डी., मुंबई के अधीनस्थ कार्यालय और विस्तार केंद्र :

✍ ललिता तावडे
बहु कौशल कर्मचारी

अंतर्राष्ट्रीय पोत और पत्तन सुविधा सुरक्षा (ISPS) कोड

एक अंतरराष्ट्रीय मानक है, जिसे 2004 में संयुक्त राष्ट्र के अंतर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन (IMO) द्वारा लागू किया गया था।

यह कोड समुद्री सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए विकसित किया गया था, ताकि आतंकवादी हमलों, अवैध गतिविधियों और अन्य खतरों से बचाव किया जा सके। ISPS कोड का मुख्य उद्देश्य जहाजों और बंदरगाहों की सुरक्षा में सुधार करना है, ताकि समुद्री परिवहन को सुरक्षित और सुचारू रूप से संचालित किया जा सके।

ISPS कोड का इतिहास:

➢ **11 सितंबर 2001 के हमले:** ISPS कोड का जन्म 11 सितंबर 2001 को हुए आतंकवादी हमलों से हुआ। इन हमलों ने यह स्पष्ट कर दिया कि समुद्री परिवहन, विशेष रूप से जहाजों और बंदरगाहों, पर भी आतंकवादी हमलों का खतरा हो सकता है।

➢ आतंकवादियों ने विमानों का इस्तेमाल किया, और इसी तरह का खतरा समुद्र में भी हो सकता था।

IMO का हस्तक्षेप: इन घटनाओं के बाद, IMO ने समुद्री सुरक्षा को बढ़ाने के लिए एक नया वैश्विक नियम तैयार किया। 2002 में, IMO ने ISPS कोड को अपनाया, और यह 1 जुलाई 2004 से प्रभावी हुआ। इसका उद्देश्य समुद्र पर चलने वाले जहाजों और बंदरगाह सुविधाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करना था।

भारत ने इस संहिता को वाणिज्य पोत परिवहन अधिनियम, 1958 के भाग IX बी में निर्गमित किया है।

इसके अंतर्गत दिनांक 19.06.2024 को वाणिज्य पोत परिवहन (पोत और पत्तन सुविधा सुरक्षा) नियम, 2024 प्रख्यापित किए गए ।

ISPS कोड के मुख्य तत्व:

1. **सुरक्षा योजना (Security Plans):** सभी जहाजों और बंदरगाहों को अपनी सुरक्षा योजनाएँ बनानी होती हैं, जिसमें सुरक्षा जोखिमों का विश्लेषण और उनके समाधान के उपाय शामिल होते हैं।

2. **सुरक्षा अधिकारी (Security Officers):** प्रत्येक जहाज और बंदरगाह पर सुरक्षा अधिकारी नियुक्त किए जाते हैं, जो सुरक्षा उपायों की निगरानी करते हैं और सुनिश्चित करते हैं कि सुरक्षा प्रक्रियाओं का पालन किया जा रहा है।

3. **सुरक्षा स्तर (Security Levels):** ISPS कोड में तीन सुरक्षा स्तर होते हैं:

○ **सुरक्षा स्तर 1 (Security Level 1):** सामान्य सुरक्षा, जब कोई विशेष खतरा नहीं होता।

○ **सुरक्षा स्तर 2 (Security Level 2):** खतरे की स्थिति, जब सुरक्षा उपायों को बढ़ाना होता है।

○ **सुरक्षा स्तर 3 (Security Level 3):** उच्चतम खतरे की स्थिति, जब अतिरिक्त सुरक्षा कदमों की आवश्यकता होती है।

4. **सुरक्षा आडिट (Security Audits):** ISPS कोड के तहत सुरक्षा आडिट किए जाते हैं, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि सभी सुरक्षा उपाय सही तरीके से लागू हो रहे हैं और सुरक्षा स्तर बनाए रखा जा रहा है।

5. **रिपोर्टिंग और सूचना का आदान-प्रदान:** जहाजों और बंदरगाहों के बीच सूचना का आदान-प्रदान महत्वपूर्ण है। यह एक दूसरे को सुरक्षा खतरों और घटनाओं के बारे में सूचित करता है।

ISPS कोड का महत्व:

1. **आतंकवाद से सुरक्षा:** ISPS कोड के लागू होने से समुद्र में होने वाले आतंकवादी हमलों के खतरे को कम किया गया है। यह सुनिश्चित करता है कि समुद्री मार्ग सुरक्षित रहें और व्यापार बिना किसी रुकावट के चलता रहे।

2. **वैश्विक सहयोग:** यह कोड देशों के बीच सहयोग को बढ़ावा देता है, जिससे समुद्री सुरक्षा का एक समान मानक लागू हो सके।

3. **आर्थिक सुरक्षा:** समुद्री व्यापार की सुरक्षा को बढ़ावा देने से वैश्विक अर्थव्यवस्था को स्थिरता मिलती है, क्योंकि अधिकांश वैश्विक व्यापार समुद्र के रास्ते होता है।

4. इस तरह, ISPS कोड ने समुद्री परिवहन को एक सुरक्षित और संरक्षित प्रणाली बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिससे न केवल जहाजों की सुरक्षा सुनिश्चित होती है बल्कि वैश्विक व्यापार भी सुरक्षित रहता है।

5. **अवैध गतिविधियों का रोकथाम**: अब हर जहाज और बंदरगाह में निगरानी की जाती थी, जिससे समुद्री अपराध, जैसे तस्करी और अवैध सामान की ढुलाई, को रोका जा सका।

6. **आपातकालीन स्थितियों में त्वरित प्रतिक्रिया**: अगर किसी प्रकार की आपातकालीन स्थिति उत्पन्न होती, तो ISPS Code ने संबंधित अधिकारियों को तुरंत कार्रवाई करने का निर्देश दिया, जिससे संकट की स्थिति को जल्दी निपटाया जा सकता था।

इस प्रकार, ISPS Code ने न केवल समुद्र में सुरक्षा की भावना को बढ़ाया, बल्कि वैश्विक व्यापार को भी एक नई दिशा दी। अब हर जहाज और बंदरगाह सुरक्षित था, और व्यापारी अपनी यात्रा को बिना किसी चिंता के शुरू कर सकते थे।

✍ अजय शंकर प्रसाद
बहु कौशल कर्मचारी

विकसित भारत

स्वास्थ्य सुविधा बेहतर हो, आयुर्वेद का ज्ञान हो ।
योग, व्यायाम नियमित दिनचर्या, शुद्ध खानपान हो ।।
प्राणवायु रहे सुरक्षित, प्रदूषण का नाश हो ।
पेड़ पौधे नष्ट ना हो, प्रकृति का विकास हो ।।
पुनःचक्रण चलता रहे, जैव प्रक्रम रक्षित हो ।
संसाधनों का सदुपयोग हो, पर्यावरण संरक्षित हो ।।
यातायात के नियम पालन, सर्व सुरक्षा है आवश्यक ।
दुर्घटना से देर भली, जीवन बचाना परमावश्यक ।।
सीमाएं भी रहे सुरक्षित, आतंकवाद जड़ से मिट जाएँ।
सुख शांति रहे देश में, संवेदनशीलता जन में आए ।।
बेरोजगारी रहे नियंत्रण, हर हाथ को यहाँ काम मिले ।
कौशल विकास प्रशिक्षण हो, हर काम का उचित दाम मिले ।।
महंगाई कमतर हो जाए, भ्रष्टाचार का नाश हो ।
श्रमकण माथे पर चमके और बेकारी का नाश हो ।।
युवा शक्ति मेहनतकश हो, खेलकुद में नाम हो ।
अंतरिक्ष में कदम बढ़ाए, तकनीकी से काम हो ।।
वैज्ञानिक क्षमता में हो वृद्धि, आत्मनिर्भर बन रहे ।
वैश्विक दृष्टिकोण हो, पर सशक्त बन कर तने रहे ।।
संस्कृति का संरक्षण हो, सेवा और सहयोग हो ।
आध्यात्मिकता बनी रहे, मणिकांचन संयोग हो ।।
प्रगति पथ पर बढ़ाने वाला, भारत का परिवेश हो ।
संयुक्त राष्ट्र में स्थाई हो, ऊर्जा संपन्न देश हो ।।
समावेशी दृष्टिकोण हो, हर जगह सरकार हो ।
विकसित भारत देश का सपना, हम सब का साकार हो ।।

***** जय भारत *****

✍ संजय कु. मीना
अवर श्रेणी लिपिक
समुद्री वाणिज्य विभाग, मुंबई

वह कौन थी?

बहुत साल पहले की बात है। मै और मेरा एक दोस्त, एक दोस्त के एक शादी के रिसेप्शन में गए थे। वहां नाच गाना, खाना-पीना सब कुछ था। अन्य लोगों की तरह हम भी इसका आनंद ले रहे थे। दुल्हा मेरे दोस्त का भी खास मित्र होने के कारण उसने उस पर सभी लोगों का ख्याल रखने की जिम्मेदारी सौंपी थी। काफी रात होने के बात सभी मेहमान आहिस्ता-आहिस्ता अपने घर जाने लगे। रात 10:30 बजे कार्यक्रम समाप्त हो गया। सब सामान इकट्ठा करते हुए हमें 11:30 बज गए। उस समय हमारे पास कोई गाडी नहीं थी इसलिए चलते हुए घर जाने के सिवा हमारे पास कोई पर्याप्त साधन भी नहीं था।

हम दोनों ने घर जाने के लिए चलना शुरू किया। रिसेप्शन में क्या क्या मजा किया उसकी चर्चा करते हुए हम चलते रहे। पुरे रास्ते में अंधेरा छाया था। उस समय सड़कों पर लाईटें नहीं थी। सिर्फ कुत्तों के भौंकने और कीड़ों की किर्र-किर्र आवाज़ सुनाई दे रही थी। रात के बारह बज चुके थे। भय के कारण हमने जल्दी-जल्दी चलना शुरू किया। अचानक सामने का दृश्य देखकर मै और मेरा दोस्त चौक गये। हमसे करीब पाँच मीटर की दुरी पर एक औरत सफेद साडी में अपने बाल कंधों पर खुले छोड़ दोनों बाहें फैलाए रास्ते के बिच में खड़ी थी। हम घबराहट के मारे वही खड़े के खड़े रह गए। कुछ देर बाद वो धीरे - धीरे चलने लगी। हम भी उसके पीछे-पीछे चलना शुरू किया। वो औरत थोड़ी देर चलती बाद में रुक जाती थी, देखते देखते अचानक गायब हो गई। यह देखकर घबराहट होने लगी मन में कही विचार आने लगे। कौन है वो ? कहाँ से आई है ? मन में कही विचार आने लगे। मन में झूठी हिम्मत इकट्ठा कर हम सामने आई मुसीबत का सामना कर रहे थे। थोड़ी देर बात हम भी घर की तरफ तेजी से चलने लगे। कुछ देर बात हम घर पहुंचे।

घबराहट से मेरा दोस्त अपने घर न जाकर मेरे घर पर ही रुक गया। हाथ पाँव धोकर हम बिस्तर पर सो गए। डर से नींद नहीं आ रही थी। जो कुछ देखा था वो सामने आ रहा था। सोचते सोचते कब नींद आयी पता ही नही चला। दूसरे दिन माँ ने दोनो के लिए नास्ता बनाया। नास्ता करके हम दोस्त के घर निकल पडे। रास्ते मे मैन दोस्त से कहा की क्यू न हम रात को जहाँ उस औरत को देखा था वहाँ चले, दोस्त बोला चलो देखते है। हम दोनों वहां पहुंचे इधर उधर देखकर उस औरत को ढूंडना शुरू किया। कुछ देर बात जो सामने देखा उसे देखकर हम हैरान रह गए। जिस औरत को हमने रात को देखा था वो कूड़े से खाने के लिए कुछ ढूंड रही थी। नजदीक से देखा तो पता चला कि वो एक मनोरोगी थी।

श्री रोहन आडाव
प्रधान लिपिक
समुद्री वाणिज्य विभाग, मुंबई

हरियाणा एक समृद्ध राज्य

हरियाणा का नाम लेते ही हमारे मस्तिष्क में एक ऐसे प्रदेश की छवि उभर आती है जिसकी पुरातन धरोहर अत्यंत समृद्ध है और वर्तमान में भी जो देश के सर्वाधिक समृद्ध राज्यों में से एक है। वैदिक भूमि हरियाणा भारतीय सभ्यता का पालना रही है। भारतीय परम्पराओं में इस क्षेत्र को सृष्टि की आधात्री की मान्यता दी जाती है, जहां ब्रह्मा ने प्रथम यज्ञ करके सृष्टि का सृजन किया था। सृजन के इस सिद्धांत की पुष्टि पुरातत्वविद गाय ई.पिलग्रिम की पुरातात्विक खोज में भी होती है जिसके अनुसार डेढ़ करोड़ साल पहले मनुष्य हरियाणा की शिवालिक की पहाड़ियों में रहता था। वामनपुराण के अनुसार राजा कुरु ने कुरुक्षेत्र की पावन भूमि में सात कोस क्षेत्र में भगवान शिव के वाहन नंदी को सोने के धार-फार से युक्त हल में जोतकर कृषि युग की शुरुआत की थी।

हरियाणा का गौरवपूर्ण अतीत अनेक किवदंतियों और वैदिक संदर्भों से भरा हुआ है। महर्षि वेदव्यास ने इसी पावन धरा पर महाभारत काव्य की रचना की। पांच हजार साल पहले यहीं पर महाभारत के युद्ध में भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को गीता का दिव्य संदेश देकरकर्तव्यबोध कराया था। उन्होंने कहा था कि '**हे मनुष्य तू कर्म कर, फल की चिंता मत कर।**' तभी से कर्म का यह दर्शन मानवमात्र का प्रकाश स्तंभ की तरह हर समय मार्गदर्शन कर रहा है।

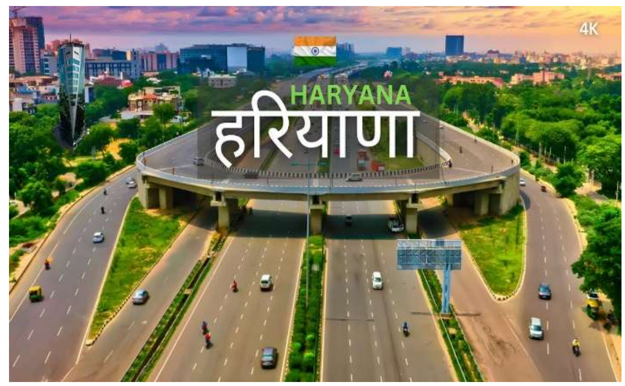

वास्तव में हरियाणा का इतिहास साहसी, धर्मनिश्ठ और गौरवशाली लोगों के संघर्ष की गाथा है। प्राचीनकाल से ही हरियाणा के बहादुर लोगों ने बड़े साहस के साथ विदेशी आक्रमणकारियों की सेनाओं का डटकर मुकाबला किया। इन तमाम झंझावातों का सामना करते हुए भी हरियाणा के लोग अपनी गरिमामयी परम्पराओं और इस पावन भूमि के गौरव को बनाए हुए हैं। 1857 में प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में यहांके वीरों ने शहादत, त्याग और वीरता का नया इतिहास रचा, जो इस कर्मभूमि की विषेशता को दर्शाता है। हरियाणा के वीरों ने सदैव ही राष्ट्रविरोधी शक्तियों का डटकर मुकाबला किया है।

हरियाणा का समाज सदैव विभिन्न जातियों, संस्कृतियों और धर्मों का मिश्रण रहा है। इस भूमि पर ये सब मिले, आपस में एक-दूसरे से जुड़े और एक सच्चे भारतीय बनकर निखरे। यहीं पर हिन्दू संतों और सिख गुरुओं ने विश्व प्रेम और भाईचारे का संदेश दिया। महाकवि सूरदास का जन्म हरियाणा के जिला फरीदाबाद में स्थित गांव सीही में हुआ था, जो भारतीय संस्कृति का एक और केन्द्र है। भगवान श्री कृष्ण की कथा हरियाणा के हर आदमी की जुबान पर है। पशुओं के प्रति प्रेम और आहार में दूध की प्रचुरता के कारण इसे दूध-दही की नदियों वाले प्रदेश के रूप में विश्वव्यापी प्रसिद्धि मिली।

भारतीय गणराज्य के एक अलग प्रदेश के रूप में हरियाणा की स्थापना 1 नवम्बर, 1966 को हुई। देश के भौगोलिक क्षेत्र का 1.37 प्रतिशत और जनसंख्या का दो प्रतिशत होने के बावजूद हरियाणा ने विभिन्न क्षेत्रों में शानदार उपलब्धियां प्राप्त की हैं जो अन्य राज्यों के लिए अनुकरणीय हैं। हरियाणा विभिन्न क्षेत्रों में तेजी से विकास करते हुए अग्रणी राज्य बन गया है। **हरियाणा आज दूध व खाद्यान्न उत्पादन में अव्वल है। यह आटोमोबाइल, आईटी और अन्य उद्योगों का बड़ा केन्द्र है। यहां अति उत्तम संचार सुविधाओं, विकसित औद्योगिक संपदाओं, चमचमाते चौड़े राजमार्ग, एक्सप्रेस वे, रेलमार्ग, मैट्रो रेल का जाल बिछ चुका है। उन पर बने अनेक ओवर ब्रिज व फ्लाईओवर यातायात को सुगम बना रहे हैं। राज्य का हर गांव बिजली की रोशनी से जगमगा रहा है और आने-जाने के लिए सड़कों से जुड़ा है। यही नहीं पेयजल और सिंचाई के लिए पर्याप्त नहरें व अन्य साधन प्रदेश में उपलब्ध हैं। शिक्षा के क्षेत्र में भी यहां आधुनिक शिक्षा के हर संकाय और विषय की शिक्षा देने के लिए अनेक विश्वस्तरीय शिक्षण संस्थान खुल चुके हैं।**

भारत दहिया
प्रवर श्रेणी लिपिक

मेरी गुड़िया

21 मई 2023 की सुबह थोड़ी परेशानियाँ लेकर आई पर कुछ वक्त गुजरने के बाद हमारे घर परिवार में खुशियों का माहोल था, हमारे घर लक्ष्मी के रूप में मेरी बेटी वेदिका गुप्ता का जन्म हुआ ।

जब डॉक्टर ने मुझे ऑपरेशन थिएटर में बुलाया, मेरे अंदर एक अलग एहसास था । नन्ही परी को देखकर मेरी आंखों में आसुँ थे, एकदम छोटी सी, रंग लाल । शायद यह एहसास सभी पुरुष को होता है पहली बार पिता बनने का ।

उसके आने के बाद मानों घर भर सा गया । उसका हँसना, रोना, चिल्लाना घर को रोशन रखता है, जैसे घर की दिया बाती । जब भी वो सोती है, ऐसा लगता है जैसे घर में कोई है ही नहीं और हमारे पास कुछ काम ही नहीं । उसके साथ दिन का पता नहीं चलता पर अगर रात को देर तक जाग गए तो काफी पता चल जाता है ।

अब वो लगभग दो साल की हो चुकी है । थोड़ी समझदार होने के साथ ही उसकी शैतानियाँ भी बढ़ गई है । वो अब बातें करने की कोशिश करती है । मैं जितना पूरे दिन में नहीं बातें करता, उससे कई ज्यादा बातें उसके साथ करता हूं शाम के कुछ घंटों में उसके सोने तक ।

रूम से बाहर जाने के लिए हमेशा तैयार रहती है । जो भी चाहे वो लेकर जा सकते, उसे बस घूमना है ।

चारदीवारी से बाहर निकलते ही उसकी हंसी देखने लायक बनती है । इतनी खुश हो जाती है, हंसने लगती है की सामने वाला बिना मुस्कराये रह ही नहीं सकता ।

ऑफिस से घर पहुंचकर जैसे ही मैं दरवाजा खोलता हूँ उसकी चहचहाहट से मन खुश को जाता है, जैसे हो हमारे आँगन की चिड़ियाँ । दिल गदगद हो जाता है जब वो दौड़कर सीने से लिपट जाता है ।

और हाँ, खाने में, खाने में तो उसका जवाब नहीं, दुध रोटी या मीठी चीजों से ज्यादा नमकीन पसंद । कुछ लोग कहते है कि मेरी तरह ही खाने की शौकीन है ।

पहले भी अपने गाँव, घर में पड़ोस के बच्चे के साथ समय व्यतित किया है, उन्हें घुमा घुमा कर सुलाया है । पर अभी जो अनुभव मिल रहा है वो पूरी तरह से नया और अलग है ।

मुझे बच्चों को लेकर कुछ सोच थी की वो दूसरें बच्चों को देखकर या दूसरें बच्चों से शरारत करना सीखते है, चीजें तोड़ते फेकते है, जिद्दी हो जाते है पर यह सारी गलतफहमियाँ अब दूर हो गई । अब यह समझ आया की ये सब चीजें बच्चों को सिखानें की जरुरत नहीं सब ऊपर वाले की देन है ।

श्री विवेक कुमार
(प्रवर श्रेणी लिपिक)

रत्नागिरी की अविस्मरणीय यात्रा

रत्नागिरी की ऑफिस यात्रा मेरे लिए एक यादगार अनुभव साबित हुई । मुंबई से रत्नागिरी की यात्रा के बारे में सोचते समय मैं इस छोटे से शहर की प्राकृतिक सुंदरता व सांस्कृतिक धरोधर को करीब से देखने के लिए उत्साहित थी ।

यात्रा की शुरवात दोपहर मुंबई से बस द्वारा हुई । लगभग 8 घंटे की यात्रा के बाद हम रत्नागिरी पहुचें। हमारे ठहरने का स्थान एक अतिथि गृह था । वहाँ पर रात गुजारने के बाद दूसरे दिन सुबह हम सभी "जे. एस.डब्लू जयगड़ पोर्ट" देखने गए ।

उस जगह ही हमने अत्यंत विशाल पानी के जहाज को

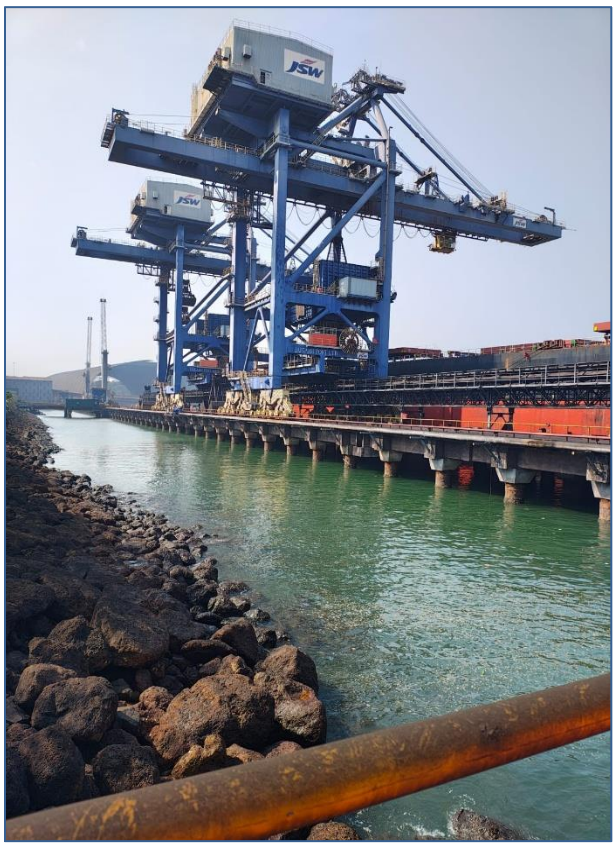

अंदर से देखा और उसी समय उस जहाज की विशेषता के बारे में हमें अधिकारियों ने जानकारी दी ।

कुछ समय बाद जहाज मरम्मत और रूपांतरण उद्योग में अग्रेसर चौगुले लवगन बंदरगाह का अनुभव किया तथा अत्याधुनिक शिपलिफ्ट प्रणाली के साथ अद्वितीय दक्षता और देखभाल का अनुभव किया ।

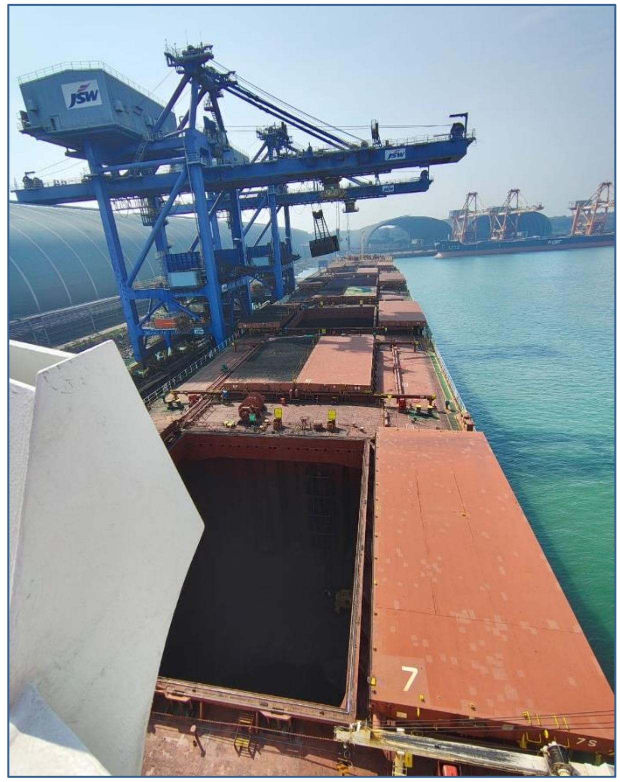

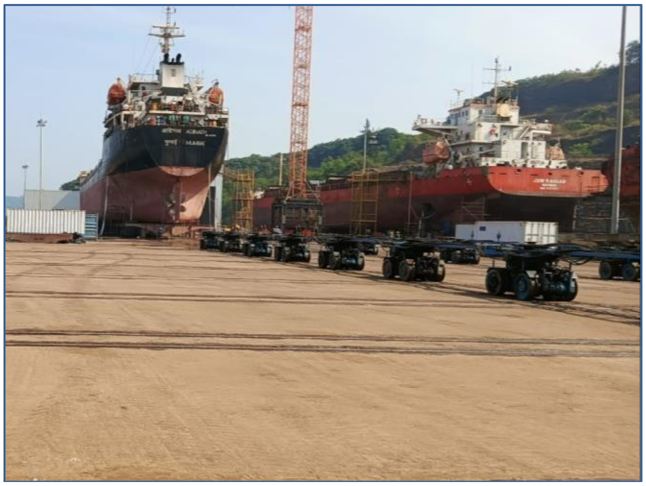

शाम को हम सभी रत्नागिरी के सुप्रसिद्ध गणेश मंदिर (गणपतीपुले) गए । मंदिर से समुद्र का अत्यंत सुंदर दृश्य दिखाई दे रहा था । हम सभी ने डूबते हुए सूरज को देखते हुए समुद्र तट पर समय बिताया जहां की सफेद रेत और नीला पानी मन को शांति प्रदान कर रहे थे ।

समुद्र के अत्यंत सुखद वातावरण का अनुभव कर के हम सभी अतिथि गृह पहुँचे । समूह के साथ बिताया गया समय और साझा किए अनुभव इस यात्रा को और खास बनाते है ।

वापसी यात्रा में, हम सभी ने इस यात्रा की सुखद यादों को सँजोते हुए मुंबई की ओर प्रस्थान किया । रत्नागिरी की यह यात्रा न केवल एक पर्यटन स्थल के रूप में बल्कि एक टीम के रूप में हमारे संबंधों को मजबूत करने में भी सहायक रही ।

- ✍ मेघना बागवे
निजी सहायक

मैं अब चला

कच्ची डगर पर मैं अब चला
गिरता, लड़ता, उठता चला

धुंध के प्रभाव से
प्रकाश अब क्षीण है
कदम बढ़ चले क्योंकि मैं अब चला
गिरता, लड़ता, उठता चला

डगर की हर डगर पर
मुसीबतों के शोर पर
लाँघ हर विघ्न को
सफलता की डोर को
पकड़ कर मैं चला
गिरता, लड़ता, उठता चला
क्योकि मैं अब चला

मंजिल का दीदार है
हर्ष की यह बात है
रुका नहीं, झुका नहीं,
अश्रुओं की धार है
लहू का रंग लाल है

चुनौतियाँ हजार है
डरने की क्या बात है
प्रकाश की एक किरण
अंधकार से बलवान है

रुका नहीं, झुका नहीं,
क्योंकि मैं अब चला,
गिरता, लड़ता, उठता चला

श्री.संतोष गडकरी
कुशल कार्य सहायक
समुद्री वाणिज्य विभाग, गोवा

भारतीय सामुद्रिक वाणिज्य (इंडियन मर्केंटाइल मरीन) - उद्यमियों के लिए उपस्थित अनेकों अवसर

भारतीय मर्केंटाइल मरीन (सामुद्रिक वाणिज्य) अपनी लगभग 7200 किलोमीटर लम्बी तट रेखा तथा लगभग 200 प्रमुख एवं गैर-प्रमुख बंदरगाहों के माध्यम से विश्व अर्थव्यवस्था में सदैव महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है।

किंतु पिछला दशक कुछ अधिक ही असाधारण रहा है, जिसमें समुद्री वाणिज्य के सभी पहलुओं में अभूतपूर्व वृद्धि देखी गई है। चाहे वह विश्व में भारतीय नाविकों की संख्या हो 'या' भारतीय बंदरगाहों के संचालन की दक्षता, तटीय शिपिंग हो 'या' अंतर्देशीय जलमार्गों में वृद्धि, सभी में एक नवीन ऊर्जा और उत्साह का संचार है।

सरकार की तरफ से भी प्रोत्साहनों की भरमार है। 'सागरमाला', 'मेक इन इंडिया', 'मैरीटाइम इंडिया विजन 2030', 'एम.के.वी. 2047', जैसी अनेक सरकारी पहल और 'एम.डी.एफ'., 'एस.बी.एफ.ए 2.0', 'अंतर्देशीय जल परिवहन (आई.डब्ल्यू.टी.)', 'तटीय बर्थ योजना' आदि के लिए बजट 2025-26 में धन आवंटन बहुत कुछ हासिल करने के लिए प्रोत्साहन प्रदान कर रहे हैं।

ऐसे में व्यापारिक नौवहन क्षेत्र केवल नौकरियों तक ही सीमित न रहकर उद्यमिता के क्षेत्र में भी असीमित अवसर प्रस्तुत कर रहा है और एम.एम.डी. मुंबई, न केवल भारत, अपितु दुनिया भर के उद्यमियों को इस विकास उत्सव का हिस्सा बनने के लिए आमंत्रित करती है।

यह क्षेत्र न केवल विदेशी मुद्रा अर्जन करता है, बल्कि आधुनिक तकनीक, लॉजिस्टिक्स, और वैश्विक संपर्क का संगम भी है।

व्यापारिक नौवहन के कुछ क्षेत्र जिनका उद्यमियों द्वारा लाभ उठाया जा सकता है, निम्नलिखित हैं।

1. पोत का स्वामित्व (Ship Owning)
भारतीय ध्वज के तहत पोत का स्वामित्व, उद्यमियों के लिए एक सुनहरा अवसर है – आत्मनिर्भर भारत की दिशा में ठोस कदम।
समुद्री व्यापार में निवेश करिए और वैश्विक जलमार्गों पर भारत की सशक्त उपस्थिति के भागीदार बनिए।

एम.एम.डी मुंबई आपकी हर प्रक्रिया में मार्गदर्शन और पूर्ण सहयोग प्रदान करेगा, जिससे पंजीकरण सरल और पारदर्शी होगा।

आई.एफ.एस.सी. (IFSC) जैसे वित्तीय प्रोत्साहन – जैसे कर में छूट, विदेशी मुद्रा में आय और आसान फाइनेंसिंग – पोत स्वामित्व को और भी लाभकारी बनाते हैं।

जहाज के स्वामित्व से आपको **फ्रेट चार्ज**, **चार्टरिंग आय**, **ऑफशोर सपोर्ट सर्विसेज**, और **क्रू मैनेजमेंट** जैसी विभिन्न सेवाओं से निरंतर राजस्व प्राप्त हो सकता है।

2. शिपिंग और लॉजिस्टिक्स सेवाएं
मौजूदा वैश्वीकरण के दौर में समुद्री व्यापार की माँग तेजी से बढ़ रही है। उद्यमी *फ्रेट फारवर्डिंग, एन.वी.ओ.सी.सी. (Non-Vessel Owning Common Carrier)* और *कंटेनर लीजिंग* जैसे क्षेत्रों में कारोबार

शुरू कर सकते हैं। इन सेवाओं के माध्यम से व्यापारियों के लिए बंदरगाह से उत्पादों को पहुँचाने में सहायता की जाती है।

3. समुद्री प्रशिक्षण और तकनीकी, वाणिज्यिक और चालक दल (Crew) प्रबंधन (Management) सेवाएँ।

भारत में हजारों युवा मर्चेंट नेवी से जुड़ने का सपना देखते हैं। ऐसे में *डी.जी. शिपिंग से मान्यता प्राप्त प्रशिक्षण संस्थान* खोलकर उन्हें विभिन्न कोर्स जैसे डेक कैडेट, इंजीनियरिंग कैडेट, या STCW ट्रेनिंग देने का एक अच्छा व्यावसायिक अवसर है।

इसके अतिरिक्त, जहाज़ों के मालिकों को **तकनीकी (Technical), वाणिज्यिक (Commercial) और चालक दल (Crew) प्रबंधन (Management)** सेवाएं भी उच्च मांग में हैं।

4. पोत निर्माण (Ship Building), पोत मरम्मत (Ship Repair) और सहायक विनिर्माण और मरम्मत सेवाएँ (Ancillary manufacturing and repair services)

शिप रिपेयर, वर्कशॉप, ड्राई डॉक सेवाएं और शिपिंग संबंधी **सहायक विनिर्माण और मरम्मत सेवाएँ** बेहतरीन अवसर प्रदान करते हैं। साथ में जहाजों को नियमित उपकरणों की आपूर्ति, खाने-पीने के सामान और ईंधन की आवश्यकता होती है। *मरीन स्पेयर पार्ट्स ट्रेडिंग*, *शिप चांदलिंग* और बंकरिंग पारंपरिक लेकिन लाभकारी व्यवसाय है जिसमें पोर्ट पर खड़े जहाजों को आवश्यक वस्तुएं प्रदान की जाती हैं।

5. बंदरगाह सेवाएं और अंतर्देशीय जल परिवहन

भारत सरकार की सागरमाला योजना और राष्ट्रीय जलमार्गों के विकास से अंतर्देशीय जल परिवहन (IWT) में नए व्यवसायिक अवसर उभरे हैं। *बोट और बार्ज सेवाएं, स्टिवडोरिंग (बंदरगाह पर माल लादने-उतारने का कार्य)* जैसे क्षेत्र छोटे निवेश के साथ शुरू किए जा सकते हैं।

6. मरीन टेक्नोलॉजी स्टार्टअप्स

डिजिटल युग में मर्केंटाइल मरीन टेक्नोलॉजी से अछूता नहीं है। *फ्लीट ट्रैकिंग सिस्टम, क्रू मैनेजमेंट सॉफ्टवेयर,* और *ब्लॉकचेन आधारित कार्गो ट्रैकिंग* जैसे क्षेत्रों में इनोवेशन के लिए स्टार्टअप शुरू किए जा सकते हैं। इसके अलावा, *स्मार्ट सेंसर, IoT,* और *AI आधारित समाधान* जहाजों की दक्षता बढ़ाने में मदद कर सकते हैं।

7. समुद्री बीमा और कानूनी सेवाएं

जहाजों और समुद्री माल के लिए बीमा अनिवार्य होता है। *मरीन इंश्योरेंस ब्रोकरेज, P&I कवरेज,* और *एडमिरल्टी लॉ* जैसे क्षेत्र में विशेषज्ञता लेकर उद्यम स्थापित किया जा सकता है।

8. पर्यटन और अवकाश आधारित व्यवसाय

गोवा, मुंबई, केरल और अंडमान जैसे तटीय क्षेत्रों में *याट और बोट चार्टरिंग, क्रूज़ पर्यटन,* और *वॉटर स्पोर्ट्स सपोर्ट सेवाएं* जैसे व्यवसाय युवाओं को खासकर आकर्षित कर रहे हैं। ये क्षेत्र न केवल रोमांचक हैं बल्कि अत्यधिक लाभदायक भी सिद्ध हो सकते हैं।

9. सरकारी सहयोग

भारत सरकार *सागरमाला योजना, मेक इन इंडिया,* और *स्टार्टअप इंडिया* के माध्यम से बंदरगाहों, लॉजिस्टिक्स और समुद्री तकनीक के क्षेत्र में उद्यमिता को बढ़ावा दे रही है। विभिन्न अनुदान, टैक्स लाभ और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से इस क्षेत्र में कदम रखने वाले उद्यमियों को सहायता प्रदान की जा रही है।

मर्केंटाइल मरीन क्षेत्र केवल समुद्री नौकरियों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक विशाल व्यवसायिक परिदृश्य प्रस्तुत करता है। यदि सही योजना, तकनीकी समझ और उद्यमशीलता के साथ आगे बढ़ा जाए, तो यह क्षेत्र न केवल आर्थिक लाभ प्रदान करता है, बल्कि देश के समुद्री विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत के युवाओं के लिए यह एक सुनहरा अवसर है कि वे समुद्री उद्यमिता के इस क्षेत्र में नवाचार और विकास की नई लहर लेकर आएँ।

एम.एम.डी. मुंबई आपके नए उद्यम में आपकी सहायता के लिए सदैव तत्पर है।

✍ मोहित बहल,
उप समुद्री सलाहकार-सह-वरिष्ठ डी.डी.जी (तक),
समुद्री वाणिज्य विभाग, मुंबई

पश्चिम भारत की एक जगह “धार” में स्थित क्षत्रिय परमार धारपवार परिवार के बारे में विस्तृत जानकारी

कुलदेवता – क्षत्रिय मराठा समाज में “शहान्णवकुली” मराठा एक ऐसा समाज वर्ग है जिसमें उनके वंशज की कुलदैवत माने जाने वाली “कुलस्वमिनी” होती है जिसे सामान्यत: उनके घराने की “कुलदेवता” के नाम से पहचानी जाती है । मराठा समाज में “कुलस्वामी” शिव रुप से तथा “कुलस्वामिनी” शक्ति के रूप में प्रकट रहती है ऐसे उनके समाज की विचारधारा रही है ।

महाराष्ट्र के नजदीक उज्जैन शहर मध्य प्रदेश के यहाँ से परमार धार पवार परिवार की कुलस्वामी है जो “श्रीमहाकालेश्वर” के नाम से प्रसिद्ध है । इस देवस्थान को 12 ज्योतिर्लिंग में से एक रूप में, भाविकों ने स्वीकार कर लिया है जब कि वहाँ से प्राचीन मंदिर परमार “राजवंश” द्वारा बनाएं गए है । उसी तरहा “श्रीगढ़कालिका” माता मंदिर भी परमार राजवंश द्वारा बनाएं जाने से इस श्री गढ़कालिका माता मंदिर के मरम्मत और रखरखाव मराठा समाज द्वारा किए जाने से “श्री महाकालेश्वर और श्रीगढ़कालिका” परिवार की मूल “कुलस्वामी” तथा “कुलस्वामिनी” के रूप में उभर आई है ।

जगतमान्य इतिहासकारों ने अपने हिंदुस्तान के इतिहास में अधिकतर भूभागपर सर्वाधिक कालखंड राजसत्ता में रहकर क्षत्रिय इतिहास अलौकिक करने में चक्रवर्ती सम्राट राजा विक्रमादित्य महाराज, चक्रवर्ती सम्राट राजा भोजदेव महाराज, अग्निवंशीय परमार पवार क्षत्रिय परमार व आगे धार पवार परिवार सदैव अग्रभागी रहा है इसकी जानकारी दी है ।

हिन्दुस्थान के इतिहास में क्षत्रियों का राजवंश परमार और उसके उपरांत धार पवार परिवार का नाम सबसे प्रथम आता है क्यूं कि प्राचीन तथा कर्तबगार राजवंश परमार की राजवट और उसके उत्तराधिकारी धार परिवार का दैदीप्यमान इतिहास मालवा मध्य प्रदेश और वहाँ के स्थानिक धार नगरी बोलचाल प्रजा के भाषा में परमार का अपभ्रंश “पवार” उनके वंशज माने जाते है । हिन्दू धर्म के पुराण ग्रंथ में यह उल्लेख है कि ऋषि वशिष्ट द्वारा मंत्र के आरोही और आहुति देकर एक तेजस्वी पुरुष प्रकट हुआ वही परमार मूल पुरुष है और उसका परमार अपभ्रंश “पवार” नाम से सुप्रसिद्ध हुआ ।

इस बात का भी पुराण में उल्लेख है कि यज्ञ से प्रकट हुआ यह तेजस्वी पुरुष अपने शस्त्रों के संग और चिलखत के सहारे, जब युद्ध, में उतरता था तब परमार के नाम से अर्थात “शत्रु सहारक” बना और ऋषि मुनियों ने उसे राजपुत्र उपाधि प्रदान की ।

जैसे समय गुजरता गया राजपुत्र के वे “राजपूत” कहलवाने लगे और जीता हुआ भूप्रदेश “राजपूताना” नाम से जानने लगा । ऋषीमुनियों से निर्मित और आशिर्वाद से चार आद्य पुरुष, चार वंश प्रकट हो गए जो चालुक्य, सोलंकी, चौहान, परिहार इस भूतल पर राज करने लगे और इस प्रकार

उन्होंने ऋषी मुनियों को अभय दिलवाया और प्रजा उनकी पूजक हो गई । इस प्रकार उन्होंने क्षत्रिय मराठा की परंपरा तथा उनके वैशिष्ट्यपूर्ण कार्यों के कारण "पवार कुली" माने लगे तथा उनका वंश अग्निवंश कहलवाने लगा और गोत्र वशिष्ठ से पहचानने लगे ।

कुछ वर्षों के बाद, मराठा समाज धार से महाराष्ट्र में स्थानांतरित होने जाने से "कुलदेवता" और "कुल स्वामिनी" स्थानिक देवी-देवताओं के पूजारन हो जाने के कारण, मराठा परिवार में "खंडेराय-भवानी" तथा "भैरव-भवानी" और ज्योतिबा-भवानी" को कुलस्वामी-कुलस्वामिनी के रूप में मानने लगे ।

इस प्रकार, आगे यह भी देखने को मिला कि "ज्योतिबा-भवानी" के भी पूजक और कुलदेवता या कुलस्वामिनी मानने वाले उभर आने से उपकुलों ने जन्म लिया और विभिन्न प्रकार के परिवार जैसे कि निंबालकर, दलवी, ढवलें, देशमुख, पाटिल, वाघ, बागवे, जगदाले, घोसालकर, इत्यादि नाम के क्षत्रिय मराठा 96 कुली, महाराष्ट्र में प्राचीन क्षत्रिय वंशज दिखाई पड़े । इन प्राचीन क्षत्रिय राजवंश तथा उनकी वंशावल का मुख्य सत्ताकेंद्र अथवा राजधानी धारानगरी मध्य प्रदेश के रूप में निर्माण हुई ।

इसवी सन 13 वे शतक के उपरांत, महाराष्ट्र में प्राचीन क्षत्रिय राजघराने का 96 कुलों का एक गट अस्तित्व में आया । जब कि वे महाराष्ट्र में स्थानिक हुए, उत्तर भारत के राजघराणों का उनमें समावेश होने लगा और इस प्रकार प्राचीन क्षत्रिय राजवंशी परमार से लेकर पवार, सोलंकी से लेकर सालूंखे, चालुक्य से लेकर चालके, चौहान से लेकर चव्हाण, शिलाहार से लेकर शेलार, यादव से लेकर जाधव, मौर्य से लेकर मोरे, शंखपाला से सकपाल, राणा से राणे, सुर्वे इत्यादि मराठीयों का 96 कुली मराठा अस्तित्व में आया ।

इतिहास यह कहता है कि शिवपूर्व कालखंड और पेशवाई के कालखंड में महाराष्ट्र में "धार पवार" ने प्रशासन का कामकाज बहुतही अच्छी तरह संभाला जिससे उन्हें पाटिलकी, देशमुखी, सरदार, जहाँगिरी, किल्लेदारी, सरंजामदार तथा संस्थानिक तक महत्वपूर्ण वतने सम्पादन करने का अवसर प्राप्त हुआ और महाराष्ट्र में विविध जगहों पर अपना राज करते हुए, नाम कमाया और घराने का वंश आगे बढ़ाते हुए, इतिहास में सफलता दर्ज की ।

इसलिए, इतिहास अभ्यासक कहते है कि इसे जय महाकाल कहे या छत्रपति निष्ठा और वंश परंपरा का अभिमान ।

सभी 96 कुली क्षत्रिय मराठा एवं महाराष्ट्र स्थित 96 कुली मराठा समाज का यह प्राचीन और शालीनता से भरा हुआ राजघराणे का वंश और उसका भव्य-दिव्य, दैदीप्यमान इतिहास की जानकारी देने का प्रयास, मेरे सभी बहनों और भाईयों तक पहुँचा रहा हूँ ।

- ✍ संजय पवार
बहु कौशल कर्मचारी

<u>टिप्पणी</u> *: उपर्युक्त तथ्य और जानकारी लेखक द्वारा अपने ज्ञान विचार तथा अन्य स्तोत्रों से संकलित की गई है जिसका सत्यापन विभाग नहीं करता तथा दायित्व अस्वीकारणीय है ।*

मेरे यादगार निवृत्त कर्मचारी

समुद्री वाणिज्य विभाग, मुंबई का कार्यालय जो पोत की सुरक्षा हेतु तकनीकी निरक्षण के लिए अग्रसर है और पोत मे जो अधिकारी वर्ग और खलाशी वर्ग कार्य करते है उनके सक्षमता प्रमाण पत्र की परीक्षा लेने का आयोजन करते है । समुद्री वाणिज्य विभाग अधिकारी वर्ग और कर्मचारी वर्ग से चलाया जाता है । कर्मचारी वर्ग मे कुछ कर्मचारियों ने उल्लेखनीय कार्य किया है उनमें श्री सदानंद गड़दे है ।

श्री सदानंद गड़दे का जन्म 01/03/1945 मे महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिल्हे में हुआ था और समुद्री वाणिज्य विभाग मे 10/08/1970 में नौकरी के लिए कार्यारंभ किया था। इस कार्यालय मे वे कार्यालय अधीक्षक के रूप मे 28/02/2005 मे निवृत्त हो गए थे, उनकी प्राथमिक शिक्षा गाँव मे हुई थी। उन्होंने लगभग सभी अनुभाग मे कार्य किया था, और सभी अनुभाग में उल्लेखनीय कार्य किया था, जो भी काम कार्यालय मे कठिन स्थिति में रहता था वे उसे सरल रूप कार्य में लाते थे । एक कार्य का में उल्लेख करना चाहता हूं कि एक बार शिपिंग ऑफिस के अधिकारी का सेवा पंजी किसी और कार्यालय मे खो गया था और मिल नहीं रहा था, तभी उनकी सेवा पंजी बनाने की जिम्मेदारी श्री सदानंद गड़दे पर आ पड़ी । उन्होंने हर एक कार्यालय मे से उनकी छुट्टी और बाकी सूचनाए मांगी और उनकी डूप्लकैट सेवा पंजी बनाई, उस कार्य को निभाते समय मेरी वार्तालाप उनसे होती थी, तभी उन्होंने मुझे कहा था कि मै यह कार्य मेरे कर्तव्य के साथ उनके पेंशन मे कोई रुकावट न आए और उनकी सेवा निवृत्ति मे कोई बाधा न आए इसी इंसानीयत के साथ कर रहा तभी मुझे समज में आया की सरकारी कार्यालय मे जो हम कार्य करते है वह काम दूसरे व्यक्ति के नैतिक रूप से सफलता होने के लिए करते रहना चाहिए जिससे कि वह भारतीय संविधान से दिए गए अधिकार से वंचित न रह जाएं ।

श्री सदानंद गड़दे की अंग्रेजी वार्तालाप और लिखना का तजुर्बा बहुत ही उल्लेखनीय था , गाव में मराठी माध्यम से शिक्षा लेने के बावजूद भी उन्होंने मुंबई मे आकर अंग्रेजी भाषा सीख कर उसमे पारंगत हो गए थे । उनके कार्यालयीन नोटिंग और ड्राफ्टिंग बहुत ही बेहतरीन रहती थी । बहुत सालों से कार्यालयीन कर्मचारिया की पदोन्नतियाँ का कार्य रुक गया था, यह बात जब उनके समज मे आई तभी उन्होंने दिन रात एक करके डिपार्टमेन्टल प्रमोशन समिति को कागजात बना कर सुपुर्द किए और समुद्री वाणिज्य विभाग, मुंबई मे मुझे प्रवर श्रेणी लिपिक के पद मे बहाल करा दिया।

एक बार एक चपरासी कर्मचारी को एक अधिकारी जो कार्यालय प्रमुख ने आरोप लगाया की उसने कार्यालय का धनादेश खो दिया था, उस उक्त वह चपरासी कर्मचारी बहुत घबरा गया था , बात इस नतीजे पर पहुंची कि उस कर्मचारी को इस आरोप मे निलंबित करने की तैयारी मे लग गए थे, तब श्री सदानंद गड़दे ने कार्यालय अधीक्षक के नाते उन्होंने उस चपरासी कर्मचारी की गलती कैसे नहीं है ऐसा उस अधिकारी को समझाया, जिससे उस कर्मचारी का निलंबन का प्रस्ताव निष्काषित किया, बाद मे मालूम पड़ा कि वह धनादेश जिस व्यक्ति को जारी किया गया था उसने ही दूसरे कार्यालय मे खो दिया था और वह सारा किस्सा झूठा था, अगर उस समय कार्यालय अधीक्षक ने उसके पक्ष मे बातचीत नहीं की होती और सच्चे वास्तविक बात का बयान न किया होता

तो उस कर्मचारी पर क्या गुजरती इसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते ।

श्री सदानंद गड़दे का स्वभाव बहुत सीधा था और समय आने पर कठोर भी रहता, वह दूसरे कर्मचारी के अच्छे के लिए डाट भी लगाते थे जिस मे उनके दिल मे बिल्कुल भी कटुता नहीं रहती थी । उनको स्वर्गवास 18/07/2020 मे कैंसर की वजह से हुआ था । श्री सदानंद गड़दे का कार्य समुद्री वाणिज्य विभाग कभी भूल नहीं सकते है ।

संतोष राम कांबले
लेखाकार,
समुद्री वाणिज्य विभाग, मुंबई

लोकल ट्रेन - मुंबई की जीवनरेखा

2.1 करोड़ लोगों की आबादी वाला मुंबई लोकल ट्रेनों को अपनी जीवन रेखा मानता है। इस शहर में रहने वाला शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा जिसने लोकल ट्रेन से यात्रा न की हो। जबकि मुंबई के अधिकांश निवासी ट्रेन

सेवाओं के बारे में शिकायत करते हैं, हर कोई समझता है कि उनके बिना जीवन कितना असंभव होगा।

मुंबई का लोकल रेल नेटवर्क इतिहास का हिस्सा है। एशिया में सबसे पहले बनाया गया रेलवे मुंबई में 1853 में अंग्रेजों द्वारा 34 किलोमीटर लंबे मार्ग पर बनाया गया था। आज, लोकल नेटवर्क बनाने वाली रेल लाइनों की कुल लंबाई 400 किलोमीटर से ज़्यादा है, जिसमें शहर के लगातार फैलते उपनगरों से उत्तर-दक्षिण और पूर्व-पश्चिम दिशा में ट्रैक चलते हैं।

मुंबई का लोकल रेल नेटवर्क दुनिया की सबसे बड़ी और सबसे व्यस्त कम्यूटर ट्रेन प्रणाली में से एक है, जो हर

दिन 1 करोड़ से ज़्यादा लोगों के लिए 2300 से ज़्यादा ट्रेन सेवाएँ संचालित करती है।

शहर की भावना का स्वागत करते हुए, रेल नेटवर्क सभी के लिए सुलभ है। यात्री लगभग 30 रुपये में 70

किलोमीटर से अधिक की दूरी तय कर सकते हैं, जो इसे दुनिया में सबसे सस्ते आवागमन में से एक बनाता है।

ये लोकल ट्रेनें शायद ही कभी काम करना बंद करती हैं और उन्हें ज़्यादा आराम भी नहीं मिलता क्योंकि वे पूरे दिन चलती हैं और आधी रात को सिर्फ़ डेढ़ घंटे के लिए शांत होती हैं। परिचालन के विशाल पैमाने के बावजूद, रेलवे प्रस्थान और आगमन के बीच 5 मिनट से अधिक के अंतराल के साथ उत्कृष्ट संपर्क प्रदान करने में कामयाब रही है।

पहली बार यात्रा करने वाले लोगों के लिए, ट्रेन स्टेशन पर भीड़ भयावह लग सकती है, ट्रेन में चढ़ने और उतरने का अनुभव भारी लग सकता है, लेकिन एक बार जब आप किसी खास समयबद्ध ट्रेन में नियमित रूप से यात्रा करते हैं, तो इसमें कुछ भी मुश्किल नहीं होता। अन्य नियमित यात्रियों के साथ दोस्ती न करना और त्यौहार या अन्य महत्वपूर्ण अवसर, चाहे वह जन्मदिन हो या पदोन्नति, हर रोज़ यात्रा करने वाले परिचित लोगों के साथ किसी भी तरह से मनाना मुश्किल है। अगर आप देर से काम कर रहे हैं और उसके बाद आपके पास किराने की खरीदारी के लिए समय नहीं है, तो कई बार खरीदारी ट्रेन में आपके पास आती है। विक्रेता ट्रेन में फल, सब्जियाँ, स्नैक्स, किताबें, ट्रिंकेट, सौंदर्य प्रसाधन और

यहाँ तक कि कपड़े भी बेचते हैं। आपको घर जाते समय सब्जियाँ काटती महिलाओं या भक्ति गीत गाते समूहों को देखकर आश्चर्य नहीं होना चाहिए। ज़्यादातर बाहरी लोगों के लिए, मुंबई को उसकी आबादी या गगनचुंबी इमारतों या मॉल से नहीं, बल्कि उसकी लोकल ट्रेनों और डब्बावालों द्वारा संचालित भोजन वितरण सेवा से सबसे अच्छी तरह से परिभाषित किया जाता है, जो समय पर भोजन पहुँचाने के लिए व्यावहारिक रूप से शहर की लोकल ट्रेनों पर निर्भर होते हैं।

रेलवे ट्रैक के नज़दीक रहने वाले लोगों के लिए रोज़ाना ट्रेनों की आवाज़ सुनना उनकी ज़िंदगी का हिस्सा बन गया है। ऐसा लगता है जैसे ये मुंबई की धड़कन है। मुंबई में ट्रेनों का अनुभव करना निस्संदेह आपकी बकेट-लिस्ट में शामिल करने लायक है।

✍ स्नेहा ठोकले (डी. ई. ओ.)

कोविड का हमारे जीवन पर प्रभाव

कोरोना वायरस या कोविड-19 ने पूरी दुनिया को हिला कर रख दिया। जब पहली बार 2020 में इसके बारे में सुना, तो किसी ने नहीं सोचा था की ये इतनी बड़ी महामारी बन जाएगी। धीरे धीरे ये हमारे जीवन के हर हिस्से को प्रभावित करने लगा – पढ़ाई, काम, रिश्ते, और मानसिक स्थिति तक।

सबसे बड़ा असर पड़ा लोगों के स्वास्थ्य पर। लाखों लोग इस बीमारी की वजह से बीमार हुए और कई लोगों की तो जान भी चली गई। अस्पतालों में जगह कम पड़ने लगी और डॉक्टर्स व नर्सेज़ दिन रात काम कर रहे थे। ये समय बहुत डरावना था। लोग एक दूसरे से मिलना भी बंद कर दिए थे। सोशल डिस्टन्सिंग और मास्क पहनना ज़रूरी हो गया था।

स्कूल और कॉलेज बंद हो गए और बच्चों को ऑनलाइन पढ़ाई करनी पड़ी। कई लोगों के पास इंटरनेट या मोबाइल नहीं था, जिससे उनकी पढ़ाई पर बुरा असर पड़ा। बच्चे घर में कैद हो गए और उनका खेलना-कूदना, दोस्तों से मिलना सब बंद हो गया। ये सब उनके मानसिक विकास पे भी असर डाल रहा था।

बड़ों की ज़िन्दगी भी आसान नहीं थी। बहुत सारे लोगों की नौकरियाँ चली गई, कुछ की तनख्वाहें कट गई और बिसनेस वालों का बहुत नुकसान हुआ। घर चलाना मुस्किल हो गया था। बहुत लोग डिप्रेशन और चिंता का शिकार हो गए। रिश्तों में भी तनाव बढ़ने लगा क्योंकि सब घर में बंद थे और बाहर निकलने का कोई तरीका नहीं था।

परन्तु, इस महामारी ने हमें कुछ ज़रूरी बातें भी सिखाई। जैसे – सफाई की अहमियत, परिवार के साथ वक़्त बिताना और जीवन की अनिश्चितता को समझना। कुछ लोगों ने इस दौरान नए हुनर सीखे, जैसे खाना बनाना, पेंटिंग करना या ऑनलाइन पढ़ाई करना। कुछ लोग अपने शरीर और दिमाग पे ध्यान देने लगे, मेडिटेशन और एक्सरसाइज़ करने लगे।

कोविड ने यह दिखा दिया की हम कितने भी आधुनिक क्यों ना हो, एक छोटा सा वायरस पूरी मानवता को घुटनों पे ला सकता है। इसने विज्ञान की अहमियत भी बताई – कैसे वैक्सीन बनाई गई और कैसे डॉक्टर्स ने दिन रात लगकर लोगों की जान बचाई।

आज जब हम उस समय को पीछे मुड़कर देखते हैं, तो डर और दर्द के साथ-साथ सीख भी याद आती है। हम आशा कर सकते हैं की हम सब अब ज़्यादा जागरूक और मजबूत बन गए हैं। कोविड ने हमें तोड़ा ज़रूर, मगर कहीं ना कहीं जोड़ना भी सिखा गया।

आदित्य (डी. ई. ओ.)

ग्राम जीवन

ग्राम जीवन भारतीय समाज की जड़ें हैं, जहां परंपराएँ, संस्कृति और प्राकृतिक सुंदरता एक साथ मिलकर एक अनोखी छवि बनाते हैं। गांव, शहरों के मुकाबले एक अलग ही शांतिपूर्ण और सरल जीवन जीने का स्थान होते हैं। यहां की जीवनशैली, कृषि, कच्चे घर और हरे-भरे खेत भारतीय गांवों की असली पहचान हैं।

ग्राम जीवन की विशेषताएँ:

1. **प्राकृतिक सुंदरता:** गांवों में प्रकृति के सान्निध्य में जीवन जीने का अनोखा अनुभव मिलता है। हरे-भरे खेत, नदियाँ, तालाब और पेड़-पौधे गांव की सुंदरता को बढ़ाते हैं। गांव का वातावरण शुद्ध होता है, यहां ताजगी और शांति का अनुभव होता है।

2. **कृषि आधारित अर्थव्यवस्था:** भारतीय गांवों की मुख्य आर्थिक गतिविधि कृषि है। अधिकांश लोग अपनी जीविका के लिए खेती पर निर्भर रहते हैं। फसलों की बुआई, सिंचाई, और फसल की कटाई के समय गांव में एक अलग ही हलचल रहती है। यहां पर खेती-बाड़ी से जुड़ी कई परंपराएँ और रीति-रिवाज भी होते हैं।

3. **सादा जीवन:** गांवों में लोग सरल और सादा जीवन जीते हैं। यहां का जीवन ज्यादातर प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर होता है, और लोगों के पास बहुत अधिक भौतिक सुख-साधन नहीं होते। परंतु, वे संतुष्ट और खुशहाल रहते हैं। गांवों में रिश्ते मजबूत होते हैं और लोग एक-दूसरे की मदद करते हैं।

4. **संस्कार और परंपराएँ:** गांवों में समाज के बीच रिश्तों की गहरी जड़ें होती हैं। यहां लोग एक-दूसरे का आदर करते हैं और परंपराओं का पालन करते हैं। त्योहारों और अवसरों पर लोग एकजुट होते हैं और सामूहिक रूप से खुशियाँ मनाते हैं।

5. **शांति और सुकून:** शहरों के शोर-शराबे से दूर गांवों में शांति और सुकून होता है। यहां की जीवनशैली में कोई जल्दी नहीं होती, लोग अपनी दिनचर्या में संतुलन बनाए रखते हैं। यहां का माहौल तनावमुक्त होता है।

समस्याएँ: हालांकि ग्राम जीवन में कई अच्छाइयाँ हैं, लेकिन यहां कुछ समस्याएँ भी हैं, जिनसे गांववाले जूझते हैं। शिक्षा की कमी, स्वास्थ्य सेवाओं का अभाव, सड़क और परिवहन सुविधाओं की कमी, और आधुनिकता की कमी कुछ ऐसी समस्याएँ हैं जिनका सामना ग्रामीण क्षेत्रों को करना पड़ता है।

निष्कर्ष: ग्राम जीवन हमारी सांस्कृतिक धरोहर का एक अभिन्न हिस्सा है। यह हमें सादगी, परिश्रम, और प्रकृति से जुड़ाव का अहसास कराता है। यदि हम ग्रामीण क्षेत्रों में सुधार की दिशा में काम करें, तो यह जीवन और भी बेहतर हो सकता है। हमें गांवों की समस्याओं को समझकर उन्हें दूर करने के प्रयास करने चाहिए, ताकि ग्राम जीवन को और भी समृद्ध और बेहतर बनाया जा सके।

✍ अजय भगत
बहु कौशल कर्मचारी
समुद्री वाणिज्य विभाग, मुंबई

यादगार पिकनिक

विद्यालय और महाविद्यालयी दिनों में, जीवन का एहसास हमेशा मीठी मीठी यादें और बातों से भरा रहता है और मन हमेशा उमंग और ताजगी से चुस्त-मस्त हो जाता है। जब स्पोर्ट्स हो या वार्षिक सम्मेलन हो तो मजा लूटने का समय हाथ से नहीं छोड़ते है हम। परंतु जब पिकनिक की बात आती है तो क्या, सोने पे सुहागा ।

जीवन के पल हमेशा मोड लेती है, महाविद्यालय का जीवन खत्म हो जाने पर यह सारी बातें यादों में ढल जाती है और हम नौकरी की तलाश में गुम हो जाते है। फिर जीवन में जिम्मेदारिया और परिवार सीमित समस्या दिल और दिमाग को घेर लेती है । ऐसे में, समुद्री वाणिज्य विभाग, मुंबई में भाग्य से नौकरी मुझे मिल गई । अब कार्यालयीन कामकाज और घर, ऐसी दिनचर्या शुरू हो गई । ऐसा लगता था अब वो दिन कहा, वार्षिक सम्मेलन, स्टेज के नाटक, स्पोर्ट्स, पिकनिक, वगैरा ।

परंतु, कामकाज के दौरान एक ऐसा अवसर प्राप्त हुआ कि 13 दिसम्बर 2024 को पिकनिक के रूप में चौगुले लवगन बंदरगाह, जहा जहाज की मरम्मत के रूप में शिप रेपरिंग यार्ड के लिए निकलना था ।

हम सब मिलके 21 का ग्रुप रहा मेरे आँखों के सामने वो दिन आए और मेरे मन में उत्साह और जोश अपने आप उभर आया । बहुत अच्छा लग रहा था की इन कामकाजों के दिनों में, एक ऐसा पल मिल रहा है की हम अपने मन को प्रफुल्लित करने के लिए, परिवर्तन के रुप में खुशियां मनाएं और एक ऐसा विचार की हमारे परिवार में किसी ने भी जहाज न देखा हो ।

चौगुले शिप यार्ड पहुचने पर वहाँ के वरिष्ठ अधिकारी ने हमारा स्वागत किया और अपनी जान-पहचान के साथ साथ अन्य अधिकारियों से भी मिलवाया जो विभिन्न पदों पर तकनीकी प्रकार के कार्य का निर्वाह करते है । प्रत्यक्ष रुप से शिप यार्ड का महत्व और काम का स्वरूप की जानकारी उन्होंने कंप्युटर प्रोजेक्टर के माध्यम से देते हुए हमें बहुतसी जानकारी से अवगत कराया जिसे देखकर और सुनकर हमें एक अजीबसा अनुभव मिला, ज्ञान की अनुभुति हुई, मन की गहराइयों तक विभिन्न श्रेणियों के यह अधिकारी किस प्रकार उल्लेखनीय कामकाज संभाल रहे है, इसका एहसास हुआ ।

वापस आते समय मेरा मन एक ही बात दोहराता रहा की जो कामकाज हम प्रतिदिन ऑफिस में कर रहे है और जो आज आखों के सामने देखा उसका एक दूसरे से कितना अटूट और गहरा संबंध है । यह पिकनिक मेरे लिए, ज्ञान से भरपुर और कामकाज में प्रोत्साहन दिलाने वाली रही ।

यह अनुभव के बीना कार्यालयीन कामकाज तथा प्रत्यक्ष पोत पर किए जाने वाला कामकाज का एक दूसरे का मेल किस प्रकार होता है इसका अंदाजा लग नहीं पाता।

✍ पौर्णिमा मोरे (डी.ई.ओ.)

आपका योगदान अमूल्य रहा – अब नए सफर के लिए शुभकामनाएं!

श्रीमती प्रतिभा सपालिगा— 39 वर्षों की उत्तमसेवा का प्रतीक।आपका योगदान अमूल्य रहा और आपकी सादगी प्रेरणा देती रहेगी।सेवा निवृत्ति पर आपको हार्दिक शुभकामनाएँ —आपकी सादगी, समर्पण और मुस्कान हमें सदैव याद आएगी।

श्री वाघ — 35 वर्षों की निष्ठापूर्ण सेवा और सहज व्यक्तित्व के धनी।आपकी शांत मुस्कान और विनम्रता ने कार्यस्थल को परिवार जैसा बनाया।सेवा निवृत्ति पर आपको हार्दिक शुभकामनाएँ।

कहानियाँ सुनाती कुछ मूक तस्वीरें

सुस्वागतम्
वाणिज्य विभाग मुंबई